Vidyáságar-Nyáyratna-Shreemat
Shántivijayji-Mahárȧj
Jain Shwetámbar-Sádhu

किताब,

[त्रिस्तुति-परामर्श,]

[सूरिमंत्रप्रसादेन--खंडयामिशतंमतं,]

(इसकों)

जनाब-फेजमाब-मग्जनेइल्म-महाराज-जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-शांति-विजयजीने-फायदेखास जैनश्वेतांबरके-मुरत्तिबकिया,-

(और.)

जैन-श्वेतांबर-संघ-पाचोरा-जिला-खानदेशने छपवाकर-जाहिरकिया.

(आमलोग इसकों-ब-गौरदेखे.)

[इसमें.]

प्रश्नोत्तरपत्रिका-पृछाप्रतिवचन-श्रीमण्यरहस्य-पर्यूषण निर्णयपत्रिका-विवेचनप्रियजैनबंधुका इस्तिहार-एकजैन बंधुकी जाहिखबर-जिज्ञासुजनमनःसमाधि-और-तीन स्तुतिप्राचीनताकिताबवगेराका-जवाब दर्जहै,-

[प्रथम-आवृति.]

अमदावाद.

धी सरस्वती ओइल इनजीन प्रीन्टींग प्रेस.

(संवत १९६३-) सने १९०७.

(मूल्य ०-८-०)

(दोहा.)

सम्यग् दर्शन अंकहै–और कृत्य सब सुन्न,
अंक जतनकर राखिये–सुन सुन दस गुन्न, १.

(दोहा.)

अपने अपने पंथकों पोषत सकल जहान,
वैसे यह मत पोषना–मत समझो मतिमान, २.

[दोहा.]

समझ बडी संसारमे–समझ टारे दोष,
समझ समझकर प्राणिया–गया अनंता मोक्ष. ३

[दिबाचा,-]

(बयाने-शुरुआत--किताब,—)

जब हमाराचौमासा-ब-मुकाम-जबलपुरथा-पांचोरा-जिला-खानदेशके श्रावकोने हमको कइखतभेजे, और अर्ज गुजारीशकियकि-आप यहां तशरीफलाकर हमलोगोंको तालीमधर्मकी देवे, जिसकी व-जहसें हम धमचुस्तबने और फेजपावे. हमने उनकी अर्ज कुबुलकिइ और ब-सवारीरेल जबलपुरसें रवानाहोकर ब-मुकाम-पांचोरा आये, तमाम जैनश्वेतांबरश्रावक टेशनपर वास्तेपेशवाइकों हाजिर हुवे, और शहरमें लेजाकर कयागकरवाया.

व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशांहोताथा और सबलोग निहायतखुश होतेथे, दूसरे मजहबके लोगबाग वास्तेमजहबीबहेसकों आतेथे और ब-हेसकरके फायदा हासिलकरतेथे, दुनियामें धर्मबराबर कोइचीज नही, दौलत-और-मालखजाना-शीशमहेल-सजहुवेकमरे-और-बागबगीचे -वदौलतधर्मके मीलेहै, खूबसुरतऔरत-उमदागेहने-शालदूशाले-खूब सुरतरुप और-लंबीउमर-पूरवभवमें पुन्यकियाथा उसीकानतीजाहै देख-लो ! कइलोग रोटियोके मोहताज और नंगेबदन फिररहेहै, सबब उ-सकायहीहै उनोने पूरवभवमें पुन्यनहीकिया, तुमारेघरजब खुशीकेनका रेबजेगें सबलोग हाजिररहेगे, मगर जबरंजहोगा कोइपासतक-न-आ-यगा, खास ! औरतभी मुसीबतकेदिनोमे किनारादेकर चलीजातीहै, इसीसे कहाजाताहै लोगमतलबके गरजी, धन-दौलत मिथ्या-और-दुनिया चंद्ररोजके लियहै,

जोशख्श ज्ञानियोके फरमानेपर अमलकरेगा-चैनपायगा, मुलाहजाकरलो ! यहबात-सचहै-जो-जूठ, ? यह मिट्टीकापुतला-न-मालमकिसरोज खाखमे मिलजायगा--जिसको तुम इतनीखातिर-व-तवाजेकररहेहो,-जैसेख्वाबमें तरहतरहचीजें देखतेहो-दुनिया उसीका एकनमुनाहै. अगर तुमकों फेजपानाहै-तों धर्मकरो.

(इसकिताबके छपवानेमे जिनजिन महाशयोने दौलत खर्चकिइ–उनके नाम इस मुजबहै.)

शेठ–दौलतरामजी–खूबचंदजी–मारवाडी–मोतीवाले,
शेठ–बालचंदजी–गुलाबचंदजी–मारवाडी–मोतीवाले,
शेठ–रतनशी–वीरम–कछ–कोठारावाले,
शेठ–हंसराजजी–मेघजी–कछ–सुजपुरवाले,
शेठ–हठमलजी–धनजी–मारवाडी–मोतीवाले,
शेठ–वेलजी–माणक–कछ–तेरावाले,
शेठ–कानजी–जयवत–कछ–वाडियावाले,

उपरलिखे महाशयोने बेशक ! इसकिताबके छपवानेमें उमदा तोंरसे खर्चकियाहै, हम–खास–मुकाम–पांचोरेमें करीब (४) महिने रहे, कोइतकलीफ–नहीहुइ, सब वख्त ज्ञानचर्चामें गुजरा, यहांपर(१) जैनश्वेतांबरमंदिर और (५०) घर श्रावकोके आबादहै, सबश्रावकोने हमारी खिदमतकिइ, इसकिताबकों पढकर आमलोग फायदा हासिल करे,–ग्रंथबनाना उसीका नामहै–जिसमें इन्साफ और चतराइके लेखहो,—

[दोहा,]

चतराइकी बातमें–बातबातमें बात,
ज्यूंकेलेके पातमें–पातपातमें पात, १

☞ ब--कलम--विद्यासागर--न्यायरत्न.
मुनि–शांतिविजयजी.

[अधिपति-जेनश्वेतांबर-मेगजीन-श्रीयुत-यतिजी-बालचंद्रजीका-बनायाहुवा-गुरुभक्तिपर-पद,-]

(रागिनी-झींझोटी.)

[जलभरन जात जमुनाके घाट-बडे ठाठसें आवतकाम-नीयां-जलभरन-इसचालपर.]

न्यायरत्न महाराज कृपानिधि-शांतिविजयजी जगउपकारी,
स्याद्वाद नयचक्र विशारद-तारक जिनवानी उरधारी, न्यायरत्न, १,
मिथ्यामतकों खंडन किनो-जैनपत्र बांचत नरनारी,
कीर्ति भूमंडलमें प्रकटी-मानत दुनिया आलिम सारी, न्यायरत्न, २,
खानदेश पांचोरा नगरे-पार्श्वचिंतामनि मंगलकारी,
तासप्रभावे दर्श लह्यो मुनि-संघसकलकों आनंदकारी, न्यायरत्न, ३,
तीनथुइका परामर्श कर-ग्रंथरचा और किना जारी,
विद्यासागरपदके धारी-बाल*प्रभाकरको सुखकारी, न्यायरत्न. ४,

(इतिगुरुभक्तिपर पद.)

[राजवैद्य-श्रीयुत-मोनलालजी-लक्ष्मीदजी-साकीन-कुशलगढ-मालवाका-बनायाहुवा-गुरुभक्तिपर कवित.]

(दोहा.-) नामशांति गुनशांतहै-शांतिमुनि अनगार,
अशुभकर्मकृतविघ्नको-शांतिकरन दातार, १,
चिंतामनिसम शांतिमुनि-रंगे अधिक वैराग,
पंचममें परगट भये-भविजनकेरे भाग्य. २,

---

* चंद्र.

[कवित्त.]

महावीरशासनके उन्नतिकरनहार–धर्मके धुरंधर ऐसे मुनिराजहै,
कुमतिमद हस्तिनके कुंभस्थलफोरवेकों-पंचाननराजसमजिनके शिरताजहै,
ज्ञानजलदाता उलसाताभविवारिजके-अचलहृदरंगमयजिनका समाजहै,
मोहनमनमाने-तीनलोकमें-न छाने-ऐसेसुगुरुसयानेविजयशांतिमहाराजहै, ३

[इतिगुरुभक्तिपर–कवित्त,–]

[कवि–सुरजमल–साकीन–उदयपुर–मुल्कमेवाडकी–
बनाइहुई–गुरुभक्तिपर–लावनी,–]

विद्यासागर न्यायरत्न श्री शांतिविजयजी–बडेअणगार,
संयमलिनो आपने छोडयो कुटुंबसब धनघरबार,
भावनगर गजरातके मांही–शहरबडो भारी उत्तम,
धन्यहै धरणी बहांकी जहां मुनिजी लियोहै जनम,
धन्य पिता मानकचंदजीको–वो चलते जिनमतको धरम,
थे सतवादी जिनके पुत्र कहलाये अनुपम,
धन्यवाद रलियातकवरकों–माता बुद्धिकी थीअगम,
संस्कारसे आप आजन्मे उदयभये निजपूरवकरम,
महाजन विशाओशवालथे–जूठवचन नही एकलगार,
संयमलीनो आपने छोडयों–कुटुंबसबधनघरबार, विद्या, १
श्रीरी आत्माराममहाराज–जिनोने लिये आपकों है पहिचान,
दीक्षालिनी साल उन्नीस और छत्तीसप्रमान,
वेशाखशुक्ल दसमी गुरुवारे–हुवेसंयमी चतुरसुजान,

मलेरकोट पांचालमुल्कमें जानतेहै सब निखिलजहान,
धर्मशास्त्रकों पढे मुनिश्वर–व्याकरणकोशकों भारीज्ञान,
सर्वशास्त्रकों आपने पृथक् पृथक् लिनेसबजान,
पंजाव पूरव मारवाड–गुजरात मालवाकों दियोतार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंब सबधनघरबार विद्या, २,

दखनमेंगये आपमुनिजी–जिनमत खूबदिपायाहै,
देशदेशमें आपका सुजश बहोतसा छायाहै,
मानवधर्मसंहिता एकपुस्तक–बहोतखूब फरमायाहै,
प्रश्नपांचको खंडनकरके मजहब रिसाला बनायाहै,
तीनथुइका परामर्श एक–तीनथुइपें रचायाहैं,
विधि जैनसंस्कार बनाकर तनपरयश उपजायाहै,
गृहस्थापनमें नाम हठीसिंह–जन्मलग्नमें विदितविचार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटंब सबधन घरबार, विद्या, ३,

उन्नीसवर्षकी उमरआपकी–जबसें यह संयम धार्यो,
धन्यमुनिजी आपने कामक्रोध रिपुकों मार्यो,
सकल कामना तजी जग्तकी–लोभपाप पावकजार्यो,
धन्यहो स्वामीआपने निजआतम कारजसार्यो,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि–धर्मधुरंधर पदधार्यो,
देशदेश और नगर गांवमें सुजश आपने विस्तार्यो,
सुरजमलकी हाथजोडकर–मुनिजीवंदना वारंवार,
सयमलीनो आपने छोडयो कुटुंब सबधन घरबार, विद्या, ४,

[इति गुरुभक्तिपर लावनी.]

[लावनी-अष्टपदी.-]

[जगतमें नवपदजयकारी-सेवतां पापटले भारी,]

(इसचालपर-)

मुनिश्री शांतिविजयजी आप-जग्तके मेटदिये संताप,
सुखसंसारसें मुखमोडयो-कुटुंबसें सबनातो तोड्यो,
ध्यान निज जिनप्रभुसें जोडयो-लोभ और मोहकाम छोडयो,
(दोहा.) पंचमहाव्रतधारके-करतेहो उपकार,
छकायाके जीवबचाते-मुनिजी वारंवार,
भुलकर नहीकरते संताप-जग्तके मेटदिये सब पाप, मुनिश्री, १
कामना छोडी सारीको-तरसना मारी भारीको,-
धन्य ऐसे आचारीको-नमनहैदृढव्रतधोरोका,
(दोहा.) पुदगल परिचय छोडियो-भव्यजीवनके काज,
विचरतहो सबजग्तमे स्वामी-धर्मध्यानके जहाज,
अनुकंपा रही दिलमें व्याप-जग्तके मेटदिये संताप, मुनिश्री. २,
दोषसब कर्मनको टार्यो-गरव तनमनसे सब गार्यो,
धर्म जिनवरकों विसतार्यो-अन्यमत चितमें नही धार्यो,
(दोहा.) मिथ्यामतकों खंडन किनो-जिनमतमंडन कीन,
श्रीजिनप्रभुके चरनसरनमें-रहतेहै लयलीन,
दुष्टजन गये आपसें कांप-जग्तके मेटदिये संताप. मुनिश्री, ३,
इंद्रियां पांचोकों मारी-आपने तजे कनक नारी,
धर्मके ग्रंथ रचे भारी-वचन सब माने संसारी,
(दोहा.) कहांतलक बर्नेनकरुं-मुनिजी परमदयाल,
सुरजमल्लकी हाथजोडकर-वंदना ल्यो प्रतिपाल,
प्रभुका नित उठकरते जाप-जग्तके मेट दिये संताप. मुनिश्री, ४,

(इति-अष्टपदी लावनी समाप्त.)

(जिनाय-नमः)

[त्रिस्तुति-परामर्श,-]

किताब,

[सूरिमंत्र प्रसादेन—खंडयामि शतं मतं,]

इस किताबको.

जनाब-फेजमाब-मग्जनेइल्म-श्रीमन्महाराज-जैनश्वेतांबर-धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-शांतिविजयजीने फायदे खास-जैनश्वेतांबरके मुरत्तिब किई.—

[शुरुआत,]

इबादत करताहुं तीर्थंकरदेवोकी-गणधरोकी और खास गुरुओकी-जिनकी बदौलत इल्मपाया और मुक्तिकारास्ता हासिलहुवा, दुनियामें इल्मबराबर कोईचीज नही, लाजिमहै इन्सानकों जोकुछइल्म आप पायाहो दूसरोंकोंभी कुछहिस्सा दे जावे,—

☞ (दोहा.—)

सुखचाहो विद्यापढो-यद्यपि नीचपें होय,—
पर्यो अपावनठौरपें-कंचन तजे न कोय, १

सरस्वतीके कोशकी- बडी अपूरव बात,
खर्चेसें नित बढतहै-बिन खर्चे घट जात, २

इस किताबमें तीनस्तुतिका परामर्श-मुखवस्त्रिकाकी चर्चा-प्रश्नोत्तरपत्रिका-पृछाप्रतिवचन-श्रामण्यरहस्य-प्रश्नपत्रिका-और पर्यूषणपत्रिका वगेराका जवाब दर्जहै, एक किताब प्रश्नोत्तरपत्रिका-पृष्ट (११) की-दुसरी पृछाप्रतिवचन पृष्ट (२७)की-तीसरी श्रामण्य-रहस्य किताब पृष्ट (२५)की-प्रश्नपत्रिका और पर्यूषणपत्रिका-जो इन दिनोंमें छपकर जाहिर हुइहै इनका माकुल जवाब इसमेदिया जायगा, खयाल करके सुनो ! मालूम होजायगाकि-किसकदर उमदा जवाब दियाहै,

---

(१) ☞ (इनसाफ,)

लाजिमहै इन्सानकों किसीकिताबकी शुरुआतकरे इन्साफकों न भूले, और शास्त्रस बुतसें पेंश आवे, बुरे अल्फाजलिखना अकल-मंदोंका काम नही, बुरे अल्फाज लिखनेसे शास्त्रार्थका मजा नही रहता, दूसरोंकी इज्जतपर चौट करना अपनी इज्जत घटानाहै. भले आदमी हमेशां भलाइकी बातें किया करतेहै, मुनासिबहै आम शख्शों-जब किसी किताबकों लिखने बैठे बुरे अल्फाज पासतक-न-आने-देवे, दुष्मनकोंभी इज्जतसें देखे, और खुशमिजाजसें लेख लिखते चले जाय, अछे लोगोंका फरमानाहैकि-सभ्यता रखो, खुशामद छोडो, अत्युक्ति मतकरो, सच बातसें जितना हठोगे उतना तरक्कीसें हठोगे, अगर कोई चाहे-मैं-आस्मानसें चांद सूर्यकों नीचे बुलवा लुं-तो-यह नीरालडकपनहोगा. चांदसूर्य हर्गिज ! नीचे न आयगें, इसीतरह इज्जतदारोंकी इज्जत किसीके लिखनेसें कम-न-होगी, आमलोग

इस किताबकों अवलसें अखीरतक गौरके साथ देखे, इसमें बहुत कुछ बातें एसी मिलेगी जो तुमकों आइंदे फायदेमंद होगी,—

---

(२) ☞(बयान वज्रस्वामी और देवर्द्धि गणि क्षमा-श्रमणवगेरा जैनाचार्योंका,—)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (३) पर बयानहैकि-वज्रस्वामी-देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण-जिनदत्तसूरि-हीरविजयसूरि-वगेराकों उत्तम पुरुषोमें जानना,

(जवाब,) जिनकों उत्तम पुरुष जानना उनके फरमानेपर अमलभी करना जरुरीहै, सीर्फ ! उत्तम पुरुष कहनेहीसे काम नही चलता, खयाल करो ! वे-चारस्तुति माननेवालेथे-या-नही,? अगर अगर कहाजाय चारस्तुति माननेवालेथे-तो-फिर चतुर्थस्तुतिकों इनकारकरना कौन इन्साफकी बातहुई, ?

---

(३) ☞(जैनाचार्य हरिभद्रसूरि-कालिकाचार्य-और धर्मकीर्त्तिसूरि—)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (७) पर मजमनहै-हरिभद्रसूरिने चारस्तुति स्थापन करनेकेलिये ललितविस्ताराग्रंथ बनाया, इनोंसें चैत्यवंदन चारस्तुति करनेका मत निकला.

(जवाब.) चार स्तुति जैनशास्त्रोंमें कदीमसें चली आतीहै, हरिभद्रसूरिजीने नयीजारी नही किई, ललितविस्ताराग्रंथ उनोने आमजैनकोंमकों वास्ते फायदेके मुरत्तिब किया, कोइनयीबात उसमें

जारी नहीकिई, जो बात कदीमसें चलीआतीथी उसीकों बयान फरमाइहै, शुरुसमयचक्रमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके वख्तसें आजतक जैनमें चारस्तुतिपढते चले आये,

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (७) पर तेहरीरहै कालिकाचार्यजीने चौथकी सवत्सरीकरनेका मत चलाया,—

(जवाव.) कौन कहताहै कालिकाचार्यजीने चौथकी संवत्सरीकरनेका मत चलाया ? जो बात शास्त्रोंमें दर्जहो उसकों नयीबात कौनकहसकताहै, ?

(कल्पसूत्रमें खुला पाठहै,—)

अंतरा-विय-से-कप्पई, (टीका) अर्वागपि पर्यूषणायां कल्पते परं-न-कल्पते-तां-रात्रिं भाद्रपदशुक्लपंचमीरात्रि-अतिक्रमयितुं,

पंचमीके पेस्तर संवत्सरीकरना कल्पे—पंचमीकोंभी कल्पे, मगर पंचमीके बाद—छठ—या सप्तमीवगेराकों करना—न कल्पे, सबुतहुवा चौथकी संवत्सरीकरना—खिलाफहुकम तीर्थंकर गणधरोंके नही, कालिकाचार्यजीमहाराज जैनमजहबमें वतौर आफताबके होगये, उनोंने कोइ नयामजहब जारी नही किया,—

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (७) पर दलीलहै धर्मकीर्त्तिसूरिने चार स्तुति स्थापन करनेकेलिये संघाचारवृत्ति बनाई, इनोनेही चार स्तुतिका पुनरोद्धार किया,—

(जवाव.) कौन कहताहै धर्मकीर्त्तिसूरिने चार स्तुति जारिकिई ? जोबात कदीमसें चलीआतीहो उसका स्थापन—या—पुनरोद्धार कोई क्यौं करे ? चार स्तुति तीर्थंकरोके वख्तसें चलीआतीहै, आचार्य

धर्मकीर्त्तिसूरि बडे आलीमहुवे, उनोने संघाचारवृत्ति फायदे आम-जैनसंघके बनाइहै, कोइ नयीबात जारी नही किई.—

---

(४) ☞ (दरबयान–महाराजश्रीसत्यविजयजीका.)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (८) पर बयानहै संवत् (१७२१) में सिंहसूरिनें सोलह शिष्योंकों उपाध्यायपद दिया, और सत्यविजय-जीकों पंन्यासपद दिया, इससे रिसाकर दूसरे गछके रुलियार यति-योंसें मिलकर कापडिकमत पैदाकिया, परंतु यतियोंका जोर होनेसें का-पकिमतकी दिप्ति–न–हुई,—

(जवाब.) कौन कहताहै महाराजश्रीसत्यविजयजीनेकापडिक मत पैदा किया ? बल्कि ! उनोने धर्मकी तरकी किई, जिनकी बदौ-लत आजभी तरकी होरहीहै, महाराजश्रीसत्यविजयजी बडे आलीम और फाजिल हुवे, उनोने किसीसे नाराजहोकर कोईबात इख्तियार नहीकिई, वे–जैनशास्त्रोंके पुरे माहितगार थे, कौन कहताहै उनकी तरकी नही हुई, बल्कि ! खूबहुई !! और देखलो ! इसजमानेमेंभी होरहीहै, महाराजसत्यविजयजीका जैसा नाम था वैसेही उनमे गुणथे, तारीफ करो उनकी जिनोने शिथिलाचारको हठाकर अपने आत्माकों धर्मपर पावंद किया,

---

(५) ☞(बयान महाराजश्रीरुपविजयजी और वीरविजयजीका,)

श्रामण्यरहस्य पृष्ट (७) पर महाराजश्रीरुपविजयजी–वीरवि-जयजीका जो बयानहै उसके जवाबमें मालूमहो–वे–आलादर्जेके कवि

थे, उनकों कवित्वशक्तिने आज तमाम जैनसंघको चकित करदियाहै, उनकी बराबरी कोई क्या करेगा ? उनोंके एकएक शेयर मानो सूत्र-सिद्धांतके जंजीरहै, उनकों किसीने सकिस्त नहीदिई, न–उनकी चीज किसीने छिनी, क्या ? वें–इसका बिल–न–थे जो अपनी चीजकी हिफाजत–न–करसके, ?

---

(६) ☞(बीच बयान–मुनिकों मौजे पहनना–और कम बारीशमें गोचरी जानेका.—

अगरकोई सवाल करेकि–जैनकिताबोंमेंकिसजगह फरमाया-हैकि–मुनि मौजे पहने और बारीशमें गोचरी जाय, ?

(जवाब.) प्रवचनसारोद्धारमें और कल्पसूत्रमें खुलासाबयानहै, जैन मुनि–पांचतरहके चमडे रखे, और कम बारीशमें गोचरी जाय, अवल प्रवचन सारोद्धारका बयान सुनिये ! गाथा (६८३) मे देखो! क्या लिखाहै, ?

(गाथा.)

अयं एलगावि–महिषी–मिगाणमजिणं च पंचमं होई,
तलिगा खल्लग बद्धे–कोसग कित्तीय बीयंतु, ५८३,

(माइना,) बकरेका चमडा, गाडरका चमडा, गौका चमडा भेंसका चमडा और हिरनका चमडा, येह पांचतरेहके चमडे जैनमुनि-कों रखना फरमाया, तलिगा (यानी) चमडेके तलिये इनइन सबबसें पांवमें पहनना मुनिकों कहा, जबकभी रातकों चलनेका कामपडे, रास्ता–न–दिखलाइदेताहो, साथके मुनियोंसें जुदे पड गयेहो उस हालतमें–या–जब कभी बिरानजमीनपर चलना पडे–चौरोंका–या–

शैरवगेरा जानवरोंका–खौफहो, या–सफरकरनेकी जल्दीहो–जिसमुनिकेपांव बहुतमुलाइमहो– खुलेपांव चलनेकी ताकात–न–हो उसहालतमें उक्त चमडेके तलियें पांवकों बांधकर मुनि चले,–जिसमुनिके पांव ठंडके सबब फटजातेहो–तकलीफ होतीहो–अतिसुकमाल मुनिकों ठंडमें चलना–न–बनसकताहो उसहालतमें मुनि उपाहन पहने, तीसरे भेदमें (वाधरी.) यानी टुटे हुवे उपानहकों सीडनेकेलिये चमडेका टुकडाभी मुनिरखे, चतुर्थभेदमें (कोसग,) यानी–किसीमुनिके नख –या–पांव फट गयेहो–उनकों बांधनेके लिये एकतरहकाचर्ममय–उपकरण रखे, पांचवेभेदमेंअग्निका खौफ होतो–अपने बचावके लिये–या–सचित्त पृथवीकायादिकी रक्षाकेलिये–या–गिलीजमीनपर बिछानेके लिये–मुनि–उक्तप्रकारका चमडारखे, एसा प्रवचनसारोद्धारका पाठहै जिनकों शकहो उक्त ग्रंथ देखलेवे,—

देखिये ! इसपाठमें मुनिकों चमडेका उपकरण और चमडा रखना कहा–अगर कोइ सवाल करे मुनिकों चमडा रखना हमने कभी–नही सुना तो जवावमें मालूमहो–प्रकरणरत्नाकरके तीसरे भागमें जो प्रवचनसारोद्धारग्रंथ छपाहै उसके पृष्ट (२६३) पर गाथा (६८२) देखो, थोडे पढे हुवे चाहे सो समजे मगर जानकारलोग सचबातकों इनकार नही कर सकते, सबुतहुवा उपर दिखलायेहुवे सबबोंसें जैनमुनिचमडेके उपाहन पहने–कोई हर्ज नही, बतलाइये ! मौजे पहनना सबुत हुवा–या–नही, कमवारीशमें गोचरीजानेके बारेमें कल्पसूत्रका पाठहैकि–अल्पवृष्टिमें स्थविरकल्पी मुनि–कंबल ओढकर गोचरीजाय,

(देखो ! पाठ कल्पसूत्रका,)

कप्पइ–से–अप्पुठीकायंसि,

(टीका,) प्रावृत्तस्य-अल्पवृष्टौ गंतुं कल्पते,

(माइना,) कमवारीशमें कंबल ओढकर गोचरीजाना स्थविकल्पीमुनिकों हुक्महै,-जिनकों शकहो कल्पसूत्र निकालकर साधुसमाचारीका पांठ देखे, वारीश बहुतहोतीहों जिसमे मारे पानीके आहार बेंकाम होजाताहो उस हालतमें गोचरीजाना बेशक मनाहै,—

---

(७) ☞ (दर बयान-महाराजश्री बुटेरायजीका.)

प्रश्नोत्तर पत्रिका पृष्ट (९) पर मजमूनहैकि-संवत् (१९२१) में बुटेरायजीने व्याख्यानके वख्त मुहपत्ति-न-बांधनेका-मतचलाया, और संवत् (१४००) के करीब जो श्रीपूज्योने ज्ञान आशातना मिटानेकेलिये आचरण चलाइथी उसका भंग किया,

(जवाब,) क्या ! तीर्थंकरगणधरोंके वचनोसेंभी श्रीपूज्योंकी चलाईहुइ आचरण बडी होगई, ? हर्गिज ! नही !! तीर्थंकर गणधरोंने जैनशास्त्रोमें किसीजगहनही फरमायाकि-व्याख्यानके वख्त-या-तमाम दिन मुहपर मुहपत्ति बांधो, अगर फरमायाहो कोई बतलावे ? आजतक कोईमहाशय इसबातकों शास्त्रपाठसें सबुत नही करसके, जोजो महाशय इसबातकी हिमायत करतेहै शिवाय आचरणा-रूढी-और-परंपराके दूसरा कोइ सबुत पेंश नही करसकते, यादरखो ! आचरणा थोडेरोज चलकर टुट जायगी-शास्त्रोका फरमाना हमेशांकेलिये कायम रहेगा, अगरपरंपराकोंही अगाडी लातेहो-तो जो लोग तमामदिन मुहपर मुहपत्ति बांध रखतेहै वे-नही कहेगेंकिहमारीभी परंपराहै और हमारे बडेरोने चलाइहै, फिर उनकों लाजवाब करनेके लिये तुमारे पास क्या सबुतहै, और जो संवत् (१४००) के करीब श्रीपूज्योने आचरणा चलाइ बतलातेहो इस बातके लिये आपलोगोके

पास क्या सबुतहे, ? किस श्रीपज्यजीने इस आचरणाकों चलाइ उनका नाम क्यौं नही जाहिर किया ? महाराजश्री बुटेरायजीसाहब जो फरमातेथेकि–मुहपत्ति मुहपरबांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा बहुत दुरुस्त था, जो बात मुताबिक हुक्म तीर्थंकर गणधरोकेहो उसको नयी कौन कहसकताहे, ? मुहपत्ति कानमें डालनेसें मुनिकों कर्णवेध कराना पडेगा, किसी जैनशास्त्रमें नही लिखाकि–मुहपति बांधनेकेलिये मुनि–कर्णवेध–करावे, कल्पसूत्रकी पुरानी पुस्तके जो सुनहरीहर्फोकी लिखिहुइ पुस्तकालयोमें मिलतीहै उसमें गणधर सुधर्मास्वागी–जंबुस्वामी वगेरा मुनियोंकी तस्बीर बनीहुइ मौजूदहै, मुहपति उनके हाथमे रखीहुइहै मुखपर बांधीहुइ नही, अगर व्याख्यानके वख्तभी मुहपति मुंहपर बांधना जैनशास्त्रोंमें लिखाहोता तो उनकी तस्बीरमेंभी मुहपति बांधनेका आकार होता.—

---

(८) ☞ (बयान महाराजश्री झवेरसागरजी–और एहवाले रतलाम,—)

महाराजश्री झवेरसागरजी मुल्क–मालवेतर्फ–बहुत अर्सेतक विचरे, और आम जैनसंघकों तालीम धर्मकी दिई, इंदोर–उज्जैन–रतलाम वगेरामें चौमासे किये, संवत् (१९३०) मे जब मध्यस्थोकी सभाकरके ब–मुकाम रतलामपर उनोने तीनथुइका परामर्श किया उस अर्सेका बनाहुवा–ग्रंथ–निर्णयप्रभाकर अबभी रतलाममें मौजूदहै. जिनकों शकहो जैनश्वेतांबरसंघसें मंगाकर देखे.

---

(९) ☞ बीच बयान–महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजी और उनका बनायाहुवा जैनतत्वादर्शग्रंथ,—)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (९) पर तेहरीरहैकि–बुटेरायजीके शिष्य आत्मारामजी हुवे उनके बनाये हुवे जैनतत्वादर्शमें तीनथुइ लिखीहै,

(जवाब.) जैनतत्वादर्शमें प्रतिक्रमणके वख्त तीनथुइ नही लिखी, अगर लिखीहोतो कोई बतलावे, जिनजिन महाशयोने जैनतत्वादर्शग्रंथ पढाहोगा उनको मालूमहोगा महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजीने–प्रतिक्रमणके वख्त तीनथुइ करना नही लिखी, बात मंदिरमे करनेकीथी कहनेवालोने उसका खुलासा–न–लिखा और कहदिया जैनतत्वादर्शमेंभी तीनथुइ लिखीहै,—मगर जैनतत्वादर्शमें प्रतिक्रमणके वख्त तीनथुइ नही लिखी, जैनतत्वादर्श पृष्ट–(४१७) परदेखो,

---

(१०) ☞ (दरबयान–कोटिशब्द–और–उसके माइनेका,)

पृछा प्रतिवचन पृष्ट (१३) पर बयानहैकि–आत्माराजीने जैनतत्वादर्शमें कोटिशब्दकों संज्ञाविशेष लिखा, पृष्ट (१४) पर तेहरीरहै आत्मारामजी प्रमाणिक विद्वान् कहलातेथे, उनकों क्या ! एसा असंगत अर्थ लिखना शोभा देताथा ?

(जवाब.) महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजीने कोटीशब्दकों संज्ञाविशेष लिखा इस लिखनेसे उनका यह मतलब नही-

थाकि–(१००) सो लाखकों कोई कोटि न समझे, और सीर्फ ! बीसकोंही कोटी समझे, ग्रंथकर्त्ताके फरमानेपर खयाल करनाचाहिये, जिसमतलबपर जो बात फरमाइहो उसीमतलबपर उसका माइना समजझना चाहिये, क्या ! एक शब्दके कई माइने नहीहो सकते, ? अगर होसकतेहै–तो–फिर कोटिशब्दके बारेमेंभी वही बात क्यौं नही समझते ? देखो,–कल्पसूत्रमें जहां तीर्थंकर महावीरस्वामीका बयानहै, और जिसजगह देवदुष्य वस्त्र गिरगयाहै उसके बारेमें टीकाकारने कितने माइनेकरके दिखलायेहै,

(पाठ–कल्पसूत्रका,)

मासाधिकसंवत्सरादूर्द्धं विहरन् दक्षिणचावालपुरासन्नसुवर्णवालुका नदीतटे कंटकेविलग्य देवदुष्यार्द्धंपतितेसति भगवान् सिंहावलोकनेनतद्द्राक्षीत्–ममत्वेनैतिकेचित्–१,

स्थंडिले–वा–पतितंइतिविलोकनायेत्यन्वे, २,

अस्मत्संततेर्वस्त्रपात्रं सुलभं दुर्ल्लभं–वा–भावीतिविलोकनार्थं–इतिअपरे, ३,

वृद्धास्तु कंटके वस्त्रविलग्नात् स्वशासनं कंटकबहुलं भविष्यतीतिविज्ञाय निर्लोमत्वात्वस्त्रार्द्धं–न–जग्राह इति, ४,

(माइना,) तीर्थंकर महावीरस्वामीका जब देवदुष्यवस्त्र स्वर्णवालुका नदीकनारे गिरगयाथा–उसपर कितनेक आचार्य फरमातेहै उनोने जो सिंहावलोकनसें देखा–ममत्वसे देखा, १

कोइ कहतेहै अछीजमीनपर गिरा–या–बुरीपर उसकोलिये देखा, २,

कोइ कहतेहै अपनी संततिकों वस्त्रपात्रमिलना दुसवारहोगा-या-आसान ? इसलिये देखा, ३,

वृद्ध कहतेहै कांटोंकी जमीनपर गिरा इसलिये स्वशासनमें कंटकलोग ज्यादे होगें एसा जानकर देखा, लोभका कोई काम नही था,—

देखिये ! यहां एकपाठपर आचार्योंने कितने तात्पर्य दिखलायेहै, जिसजिसमतलबसे जो जो बात ग्रंथकर्त्ताने बयान फरमाईहो उसी मतलबपर उसको समझना और उसपर अमल करना चाहिये,—

---

(११) ☞ (चिरागके बारेमें कइलोगोकीराय,)

कइयोंका फरगानाहै दियेका चांदना अचितहै, मगर नही ! दियेका चांदना अचितनही, सचितहै, जिनकों शकहो कर्मग्रंथ देखे, उसमें रक्तवर्ण और उश्नस्पर्शतेउकायमें फरमाया, उद्योतनामकर्म नही फरमाया,-इसबातपर कोइ खयालकरे तो बखूबी उसकों मालूम-होगा. और उसके दिलका शक रफाहोगा,

प्रश्नपत्रिकाप्रश्न (९) में बयानहैकि-जिसगछका नामलेकर साधुबजेतिसगछके आचार्यनी आण-न-पाले-वो-साधुहै-या-नही,?

(जवाब.) अगर उस आचार्यका हुक्म-मुताबिकशास्त्रकेंहो-तो-उसको ब-सिरोचश्म कुबुलकर, मगर जब खिलाफ हुक्म शास्त्र-के कोईबात आचार्य फरगावे-तो चेलेकी फर्जहै उसको न-माने, साधुपना अपनीकायाकी शुद्धिकेलियेहै-नकि-जूठी-हांमे-हां-मिला-नेकेलिये,

(१२) ☞ (बयान–मुखवस्त्रिका चर्चाका,—)

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (४) पर मजमूनहैकि–यदि आपको यह पुछनाहो मुहपत्ति कानमें घालना कहां लिखाहै–तो–मैं–पंचांगीके अनेकप्रमाण देताहुं,—

(जवाब.) अनेकप्रमाण तो अलग रहे एकभी कोई बतलावे, प्रश्नोत्तरपत्रिकामे लिखा व्याख्यानके वख्त मुहपत्ति बांधना श्रीपूज्योकी चलाईहुई आचरणाहै, और यहां लिखा पंचांगीके अनेक प्रमाण देताहु, क्या खूब बातहै ! जिनके लेखमें पूर्वापर विरोध झलकरहाहै, विपाकसूत्रका जो सबुतदियाहै उसमे किसजगह लिखाहैकि–गौतमस्वामीने व्याख्यानके बख्त मुंहपर मुंहपत्ति बांधी ? मृगापुत्रकों जब देखनेगयेथे उसवख्त बदबूके सबब मुंह बांधाथा, व्याख्यानके वख्तकी वहां कोइ बात नहीथी, दुसरासबुत जो महानिशीथसूत्रका पेशकियाहै उसमेंभी व्याख्यानके वख्तका लेख नही है, तीसरासबुत जो औघनिर्युक्तिका दिया उसमेभी व्याख्यानकेवख्त बांधना नही फरमाया,

(पाठ–औघनिर्यक्तिका–यहां देतहै, देखलो,)

(गाथा.)

संपाइम रयरेणु–पमज्जणठावयंतिं मुहपत्ती,
नासंच मुहंच बंधइ–ताए वसहि पमज्जंतो,

(व्याख्या,) संपातिमसत्वरक्षणार्थं जल्पबिः मुखे दीयते, तथा रजः सचित्तपृथ्वीकायः सत्प्रमार्जनार्थंमुखवस्त्रिकाग्रहणं प्रतिपादयंतिपूर्वषयः–तथा नाशिकां मुखंच –बध्नाति, तथा मुखवस्त्रिकया वसतिं च प्रमार्जयेत् येन मुखादौ–न–प्रविशतीति,

देखिये ! इसमें किसीजगह नहि लिखाकि–व्याख्यानके वख्त–मुहपति बांधो, बल्किसंपातिमसत्वरक्षणार्थं जल्पद्भि मुख दीयते, एसा पाठ जाहिरहै, (यानी.) उडतेहुवे जीव मुखमें–न–आनगिरे इसलिये मुखवस्त्रिका मुखके अगाडीरखना कहा, मगर बांधना नही फरमाया, जो लोग औघनिर्युक्तिके भरुसे बैठेहो–वे–अपना–शक–रफा करे, औघनिर्युक्तिमें साफ बयानहैकि–बोलतेवख्त हाथमें रखो, मकानसाफकरतेवख्त बांधना कहा सो बारीकरज मुखमें–न–आनगिरे इसलिये कहा, और वह मुखवस्त्रिकाभी दूसरीतरहकी कही, जोकि–गलेकेपीछे ग्रंथीबंधन–होसके–उतनीबडी होना चाहिये व्याख्यानके वख्तकी वहां कोईबात नहीहै, उपाश्रय–यानी–रहनेके मकानकों साफ करतेवख्त बांधना कहा उसवख्त कोई बांधता नही और व्याख्यानके वख्त बांधनेका पक्ष पकडतेहै, दीयते पदका माइना बांधना हर्गिज ! नही होसकता,–बोलतेवख्त मुखके सामने रखनेकी मुहपति–जो–एक बीलस्त चारअगुलकी होतीहै वह जुदीहै और मकानसाफकरतेवख्त बांधनेकी जुदीहै, जोकि–उतनीबडी होनाचाहिये जिससे मुख ढका जासके–और–उसका त्रिकोण–आकारकरके गलेके पीछाडी गांठ दिइ जासके.

(पाठदुसरा औघनिर्युक्तिका,—)

(गाथा.)

चउरंगुलं विहत्थी–एयं मुहणंतगस्सपमाणं,
बीयं मुहप्प माणं–गणण पमाण इक्कैक्कं,

(व्याख्या.) चत्वार्यंगुलानि–वितस्तिश्चैकेति एतच्चतुरस्रं मुखानंतकस्यप्रमाणं अथवा–इदंद्वितीयंप्रमाणं–

यदुत–मुखप्रमाणं कर्तव्यं मुखानंतकं एतदुक्तं भवति वस्तिप्रमार्जनादौ यथा मुखं प्रछाद्यते, कृकाटिकायां ग्रंथिर्दातुं शक्यते तथा कर्तव्यं–त्र्यस्रं कोणद्वये गृहीत्वा यथा कृकाटिकायां ग्रंथिर्दातुंशक्यते तथा कर्तव्यं एतत् द्वितीयगणनाप्रनाणेन पुनस्तदैकैकमेव ग्रहणं मुखानंतकं भवतीत्यर्थः

इसका माइना अवलआचुकाहै, सबुतहोगयाकि–मकान साफ करतेवख्त जिस मुखवस्त्रिकासे मुख बांधना कहा वह उतनीबडी होनाचाहिये जो मुख और गलेतक बांधी जासके, व्याख्यानकेवख्त बांधनेका इसमें कोइ जिक्र नही, जोलोग परंपराका सहारालेतेहै उनकों याद रहे परंपरा तरहतरहकी चलपडी किसकिसपर अमल करोगे?–शास्त्रओघनिर्युक्तिका फरमानाहै जल्पद्भि र्मुखे दीयते, अगर बांधनेका हुक्म होतातो दीयतेकी जगह बध्यते पाठहोता,

पृछाप्रतिवचनपृष्ट (९) पर तेहरीरहैकि–आदिपदसे व्याख्यान अवसरमें सूत्र आशातना तथा अनुपयोगसेहुइ सावद्यभाषा इन दोनोदोषोसे बचावकेलिये कानमें घालतेहै यहरीति पुष्टालंबन सहितहै,

(जवाब,) जोबात मूलसूत्रमेंनही, न–टीकामें–है कोइ किससबुतसे मंजूर करेगा, सूत्रआसातनाका सहारा लियाजाय तो व्याख्यानके वख्तकाही क्या मुदा रहा? सूत्रसिद्धांत साधुलोग हरवख्त बांचते रहतेहै, फिर एसाकहना चाहिये जबजब सूत्रसिद्धांत बांचना मुहपर मुहपति बांधकर बांचना,

पृछाप्रतिवचनपृष्ट (९) पर हितशिक्षाके रासका सबुतदियाहैकि–"मुखे बांधी ते मुहपती"–(यानी) मुखपर बांधीजाय वह मुहपति जानना,–

(जवाब.) हितशिक्षाके रासकों बनानेवाले रिखवदासजी श्रा-

वक संवत (१६८२) मे हुवे, कहिये ! फिर इनका बनाया हुवा रास किससूत्रकी पंचांगीमें गिनना, ? अगर कहा जाय यहतो एक भाषा-काग्रंथहै तो फिर पंचांगीके सबुतोंमें इसको कोई कैसे मजूर कर-सकेगा, ?

पृछाप्रतिवचनपृष्ट (१०) पर बयानहैकि–व्याख्यानमें बांधना किसी सूत्रके अक्षरोसें नही पाइ जाती, मालुमहोताहैकि–औघनिर्यु-क्तिमें लिखे आदिपदसें व्याख्यानमेंभी बांधनाचाहिये एसा समझकर परंपरामें घालतेहोगें,—

(जवाब.) जोबात किसीसूत्रके अक्षरोसें नही पाइजाती उ-सको कोई किससबुतसें मंजूरकरेगा ? आदिशब्दसें बांधनेका सहारा ले-नाभी इसालिये ठीकनहीकिं औघनिर्युक्तिमें व्याख्यानकेवख्त आदिश-ब्दसें मुहपतिबांधो एसा नही फरमाया, सबुतहुवा व्याख्यानवख्त-या–तमामदिन मुहपर मुहपति बांधना किसी जैनशास्त्रमें नहि लिखा, परंपरा–रूढी–और–आचरणाका सहारा लेना गलतहै, तमाम जैनों-को तीर्थंकरगणधरोंके फरमानेपर अमल करना चाहिये,—

---

(१३) ☞ (बीचबयान–प्रश्नपात्रिकाके (२९) में सवालका,—)

सवाल (२९) में बयानहैकि–जिसचेलेकों गुरुने निकालदिया और–वो–चेला गुरुकी नींदाकरनेलगा, पीछे ग्रामांतरके श्रावकोंने उसकों मानलिया–वे–श्रावक सम्यक्ती समझे जावे–या–मिथ्यादृष्टि समझे जावे, ? उसकों उनोके साधु–न–वर्जे–तो विरोधक–या–आ-राधक, ?

(जवाब.) किसचेलेकों किसगुरुने निकालदिया इसका खुलासा जाहिर क्यौं–न–किया,? जाहिर करतेतो वहशख्श जवाबदेता, इन्साफ फरमाताहै चेला अगर अपने सत्यधर्मपर पावंदहो–और–गुरु उसकों बेइन्साफसे निकालदेवे–तो–उसमें गुरुका दोषहै, चेलेका नही, और वह गुरुही क्या ! जो इन्साफ–न–करे. सत्यवादीचेला अपनेधर्मपर पावंद रहे तो उसका कोइ क्या करसकताहै, ? दशवैकालिकसूत्रकी अवलगाथामें बयानहै "देवाभी–तं–नमंसंती जस्स धम्मेसया मणो," देवताभी उसकों नमस्कार करतेहै जिसका मन हमेशां धर्मपर पावंद हो,–और–उसकी हमेशां फतेह होगी, उसकों माननेवाले–श्रावक–सम्यक्ती कहेजायगें–मिथ्यादृष्टि नही, दुसरे साधुओके मनाकरनेसें उस सत्यवादीका कोई नुकशान नही,—

---

(१४) ☞ (दरबयान–दांतोंकी बत्तीसीका.)

प्रश्नपत्रिका–सवाल (५२) पर प्रश्नकर्त्ताने पुछाहै–साधुओने दांतोकी बत्तीसी चढाना कहां कहाहै, ?

(जवाब.) हरजगह जैनशास्त्रोमें कहाहै संयमकी हिफाजतकरो, और संयमसेंभी अपने आत्माकी ज्यादेहिफाजतकरो, जब आत्माही–न–रहेगा तो संयमकी हिफाजत कैसेहोसकेगी, ? सबुतहुवा आत्माकीहिजाफत करना जरुरीबातहै, आत्मा शरीरके ताल्लुहै, और शरीर खानपानके–जबकि–खानपानकी चीज-चवा-चवाकर–न–खाइजाय हजमकैसेहोसकेगी, ? हजम–न–होगी तो तरेहतरहके रोग पैदाहोगें, और फिर उसके मिटानेके उपावलेने पडेंगे, उसलिये अगर अवलसे उपाय करलिया जायतो क्या ! हर्जहै, ? सबुतहुवा

दांतोकी बत्तीसी चढाना देहरक्षामें सामीलहै और उसका चढाना कोइ हर्जकी बातनही, अगर कोई जैनमुनि–शौखसें–या–अपनी खूबसुरतीकेलिये दांतोंकी बत्तीसी चढावेतो बेशक मनाहै, मगर आत्मरक्षाकेलिये कोइ मन नही,

---

(१५) ☞ (बीच बयान–आनंदसूरिके,—)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (४) पर तेहरीरहैकि–वर्तमानमें–आनंदसूरि प्रमुख मध्यमभेदमें जानना,

(जवाब,) कौनकहताहै आनंदसूरि–मध्यमभेदमे–थे,? बल्कि! उत्तमपुरुषोमें थे, आमलोग इसबातकों मंजूर करतेहैकि–उनोने मुताबिक जमानेके तरकी धर्मकी अछीकिई, मजहबी–बहेस–वे–उमदातौरसे जानतेहै और यहगुण आचार्योंमें होनाभी जरुरीथा विना इस गुणके तरकी धर्मकी कैसे होसकतीहै, ? देखलो ! समवसरणमेंभी वादी मौजूदरहतेथे, जोकि–इन्साफस–प्रतिवादीयोंकों लाजवाब करतेथे, आठतरहके प्रभावकोंमें वादीकोंभी प्रभाव गिनेहै, महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजी–इस जमानेमें प्रभावक होगये,–इस बातकी कोइ जैन इनकार नही करसकता,

---

(१६) ☞ (दरबयान–जैनतत्वादर्शग्रंथका,—)

अगर कोइ कहे जैनतत्वादर्श–और–श्राद्धविधिमें तीनथुइ बयानकिइहै–तो जवाबमें मालूमहो–जैनतत्वादर्शमें तीनथुइ नही बयानकिइ, बात मंदिरकीथी लिखनेवालोने उसका खुलासा–नही दिया, और गुम्मलेख लिखलिखकर कहादिया तीनथुइ कहीहै, जैनतत्वादर्श-

में बात मंदिरमें पढनेकी थी, प्रतिक्रमणकेलिये नही, ज्यादे मंदिर हो-तो-एकएकमंदिरमें एक एक स्तुति पढनाभी. कहा, जैनतत्वादर्शका पाठ यहां देतेहै आमलोग देखे,

(पाठ-जैनतत्वादर्शका,)

पृष्ट (४१७) पर लिखाहै-"एक निश्राकृत उसकों कहतेहै जो गछके प्रतिबंधसे बनाहो. जैसाकि-यह-हमारे गछका मंदिरहै, दूसरा अनिश्राकृत, जिसपर किसीगछका प्रतिबंध नहीहो, इन सर्व मंदिरोमें तीनथुइ पढना, जेकर सर्व मंदिरोमें तीनथुइ देते बहुतकाल लगता जाने तथा मंदिर बहुतहोवे-तहां-एक एक जिनमंदिरमें, एक-एक थुइ पढे, इसवास्ते सर्वजिनमंदिरोमें विशेषरहित भक्ति करे,"-देखिये ! इसमें प्रतिक्रमणका नाम निशानभी नही, आगे पीछेका संबंध मिलाकर देखना चाहिये,-कोई महाशय यह-न-समझेकि-जैनतत्वादर्शमें प्रतिक्रम णके वख्त-तीनथुइ-लिखीहै,

श्राद्धविधिग्रंथकाभी खुलासा बयान करतेहै, सुनो! चिमनलालजी सांकलचंदजीकी छपवाइहुइ किताब श्राद्ध-विधिभाषांतर पृष्ठ (१५२) पर लिखाहैकि—

(गाथा.)

निस्सकडमनिस्सकड चेइए सव्वेहिं थुइ तिन्नि,
वेलंच चेइ आणिय-नाउं इक्किक्किया वावि,—

(अर्थ,) निश्राकृत ते कोइगछनुं चैत्य-अनिश्राकृत-ते-गछवगरनुं सर्व साधारण चैत्य-एवां बंने प्रकारना चैत्ये त्रण स्तुति कहवी, एम करतां जो घणीवार लागे-

अथवा घणां चैत्यहोय–अने–बधामां त्रणत्रण स्तुतिकहतां घणीवार लागे–तेटलीवार टकी–शकाय एम–न–होय–तो एकएक थोय कहेवी, पण जेजे देहरे गयां त्यां स्तुति कह्याविना पाछुं-न-फरवुं,—

देखिये ! यहांभी वहीबातहै जो जैनतत्वादर्शमें फरगाइहै, प्रतिक्रमणके वख्त तीनथुई करना किसीजगह जिक्र नही, नाहक ! लोग भलमें पडेहै, कहां मंदिरकी बात-और कहां प्रतिक्रमणकी-?-जमीन-आस्मानका फर्कहै,—

---

(१७) ☞ (जवाब–विवेचनप्रिय–जैनबंधुके सवालोंका,)

१—(सवाल,) जैनतत्वादशमें त्रणथइ चैत्यमां करनी-सो-कैसे ? और क्या ! मुद्दाहै, ?

(जवाब.) चैत्यपरिपाटीके वख्त मंदीरमें तीनस्तुति बोलना, बस ! यही मुद्दा आरै यही बातह, दुसरा कोइबात नही,–अगर वख्त थोडाहो–तो एक एक जिनमंदिरमें एकएक स्तुति पढनाभी पाठहै, जैनतत्वादर्श–और–श्राद्धविधिका पाठ उपर लिखचुके जिनकों शकहो–दोनों–ग्रंथ खोलकर देखे,

२—सवाल, सदा रंगेहुवे कपडे पहनना कहां कहाहै ?

(जवाब,) निशीथसूत्रके अठारमें उदेशेमें कहाहैकि–जैनमुनि–नयेकपडेकों कथ्येचुनेवगेराका रंगदेवे, जिशको शकहो निशीथसूत्रका अठारवा उदेशा देख लेवे,

३—सवाल, करमिभंते पहिले और इर्यापथिका पीछे–सो–कैसे, ?

(जवाब.) सवालकर्त्ता किसगलकाहै जाहिर करे, उसपर जवाब दिया जायगा.

४—नवीन आचार्य किसको कहतेहो—और प्राचीन आचार्य किसको कहतेहो , ?

(जवाब.) ब—हुक्म तीर्थंकर गणधरोंके चले वह प्राचीन-और—खिलाफ हुक्म चले वह नये आचार्य जानना.

५—सवाल, मुहपति व्याख्यानके वख्त कानमें डालनाकि—नही, ?

(जवाब.) व्याख्यानके वख्त-या-तमाम दिन-मुहपर मुदपत्ति बांधना-या-कानमें डालना-किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा, पेस्तर बहुत कुछ बयान इसके बारेमें देचुकेहै, पढनेवालोंने पढाहोगा,

शास्त्र औघनिर्युक्तिका खुला पाठहै-जल्पद्भिर्मुखे दीयते,

अगर बांधना मंजूर होता तो बध्यते एसा पाठ होता, मगर कैसे हो ?

तीर्थंकर गणधरोंका हुक्मही नही तो पाठ कहांसें आवे ?

---

(१८) ☞ (जवाब दुखगर्भितवैराग्यका,)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (५) पर दलीलहैकि—"घरमेंखानेके दुखसें अर्थात् आजिविका पुरी—न—होनेसे दीक्षालेकर थोडेसे पढकर गुर्वादिकोंके प्रत्यनीक " "यहां पर्देका क्या ! कामहै ? "—इत्यादिवचनबोलनेवाला, "सर्वज्ञभाषितवचनोका उथ्थापनकरनेवाला, चतुर्विधसंघका प्रत्यनीक—अन्यायरत—अशांतिका करनेवाला"—वगेरा वगेरा,

(जवाब.) सर्वज्ञभाषितवचनकों उथ्थापनकरनेवाला—और—

चतुर्विसंघका प्रतनीक जैनमें उसकोकहा–जो–खिलाफ हुकम तीर्थंकर गणधरके नयामजहबइजादकरे, अशांतिकरनेवाला उसको कहना जो संघमे भेदडाले–और–अपनानयाफिरका कायमकरे, न्यायरत्न अशांतिकरनेवाले नही बल्के! लेखककीकुतर्करुप अशांतिकों माकुलजवाबोसे मिटानेवालेहै–और–वे–दुनियादार हालतमें–अंग्रेजी–हिंदी–गुजराती संस्कृत चारइल्मके जाननेवालेथे, उनकों खानपानकेलिये घरमें बहुतकुछ मौजूदथा. उनकों दुखकौनसीबातका था–जो–दुखगर्भित–वैराग्यसे दीक्षा इख्तियार करे, ? उनोंने अपने आत्मसाधनकेलिये दीक्षा इख्तियार किइहै, गुरुओका प्रत्यनीक कौनहै ? इसपर अकलमंदलोग दर्याफत करे, पर्देके बारेमें न्यायरत्नका फरमाना बहुतदुरुस्तहै, देवमंदिर–और–धर्मशास्त्रकी व्याख्यानसभामें पर्दा करना किसीशास्त्रका हुकम नही, मुल्कमारवाड–और–पूरवतर्फ श्रावकोंमें रवाजहैकि–जिनमंदिरमें पूजा पढाते वख्त–और–धर्मशास्त्रकी व्याख्यानसभामेंभी औरतोंकेलिये पर्दा लगातेहै, औरतें व्याख्यानसुननेकी जगह बातें करतीहै, न्यायरत्न इसपरफरमातेहै मंदिर और व्याख्यानसभागें पर्देका क्या कामहै, ? कहिये ! इसमें कौन बेजा बातहै, ?

कोइशख्श शास्त्रकी बातकों गप्प कहे–और–बेइन्साफकी बातकरे तो उसको जबानीताडना देना जैनशास्त्रका हुकमहै. देखो ! रायपसेणीसूत्रमें क्या लिखाहै ? उसपर ख्याल करो, !! केशीकुमारजैनाचार्य जब परदेशीराजाके मुल्कमें गयेथे और इसशहरका राजा–परदेशी–जब मजहबी बहेसकेलिये उनकेसामने आयाथा–कुतर्क करनेलगा उसहालतमें केशीकुमारजैनाचार्यने उसको साफ कहदियाकि–मूढतराएणं तुमं पयेसीराया,–बतलाइये ! मूढशब्दका माइना क्याहुवा सबुतहुवा मुनिलोगभी कुतर्ककरनेवालोंकों जबानी ताडना करे,

देखो ! ज्ञातासूत्रमेंभीलिखाहै तं धीरथ्थुणं अज्जो नागसिरीए

–माहणीये अहएणाए–अपुएणाए-जाव-णिवोलियाए,–माइना इसका इसतरहहैकि–जब–नागिला–माहणीने धर्मरुचिनामके अणगारकों जहरमय कटुकतुंबेका पाक खानेको दियाथा और उसकेखानेसें धर्मरुचि अणगारका अंतकालहुवाथा–उसवख्तकहाहैकि–धिकारहै नागिला माहणीकों–जो–अधन्या–अपुन्या-और-नींबोलीकी तरह कटुकहै जिसने जहरमय पाक–धर्मरुचिअणगारकों दिया–सबुतहुवा–गुनहगारको सख्तकलामकहनाकोइ हर्ज नही.–जिसकों शक हो–ज्ञातासूत्र देखलेवे, अगरकोइ कहे श्रावकोंकों देवानुप्रिय कहनाभी–तो–शास्त्रोंमे लिखाहै, जवाबमें मालुमहो-जिसश्रावककों देवताभी धर्मसें–न–डिगा–सके उसकेलिये देवानुप्रिय कहाहै–या–अधर्मीयोंकेलिये, ? जो जो श्रावक खिलाफहुकम तीर्थकरगणधरोके चलतेहै, धपशास्त्रपर एतकात नही लाते और शास्त्रकी बातोंकों हंसीमें उडातेहै, उनकों सख्त–सुस्तकहना कोइ मुमानियत नही,

आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें पाठहै जो शख्स गुस्ताखीसें पेश आवे गुरु उसकों सख्तसुस्तवचनकहे, मशलन ! जो घोडा अपनी चालपें चलताहै उसकों चाबुक कोइ नही लगाता. लेकिन ! जब चलनेमें बदमाशी करताहै-उस हालतमें उसकों चाबुक दिखलाना फर्जहै,--कोइ शख्स किसी उस्तादकेपास वास्ते सवालाकों जावे तो बडे अदवसें पेश आनाचाहिये मुनिजनोंकों कइजगह मूर्खोसें बहेस करना पडतीहै, जब-वे-बेहुदा-बेसनदबातें पेश करतेहै उसहालतमे उसकों जबानी ताडना देना मुनिलोगोकी फर्जहै, उसपर कइयोंका कहना होताहै मुनिलोगोंकों गुस्सा करना ठीक नही, मगर अपनी भूलकों कोइ नही देखता, ? और इसबातपर कोइ खयाल नही लाता-कि-तुमारी भूलहुइ जब मुनिलोग तुमारेपर नाराजहुवेहै. इसलिये हर-

शख्शकों अपनी भूलपर खयाल करनाचाहिये, और उस्ताद जोकूछ फरमावे उसपर अमल करना चाहिये,

(आवश्यकसूत्रके-अवलअध्ययनमें पाठहैकि,—)

जह जच्च वाहलाणं-अस्साणं जणवएसु जायाणं,
सयमेव खलिण गहणं-अहवावि बलाभिउगेणं,
पुरिसज्झाएवि तहा-विणीय विणयंमि नथिअभियोगो,
सेसंमि अभियोगो-जणवयजाए जहा आसे,

(टीका,) यथा जात्यवाल्हिकानामश्वानां जनपदेषु मगधेषु जातानां स्वयमेव खलिनस्य-कविकस्यग्रहणं अथवापि बलाभियोगेन तथा पुरुषजातेपि पुरुषविशेषेपि विनीतविनये अभ्यस्तवैनेयिके नास्ति अभियोगः--शेषेविनयरहिते बलाभियोगो वर्तते,—

(माइना.) जैसे उमदा घोडा लगामकों खुद ले लेताहै--याउसकों पकडकर मुंहमें लगाम पहनाइजातीहै, ऐसे विनयवान् चेला अगर खुद-समझजाय और कुतर्क न-करे-तो निहायत उमदा बातहै, अगर समझानेपरभी-न-समझे और गुस्ताखीकरे-उसकेलिये बलाभियोग (यानी.) जबानी ताडना देना, देखिये ! इस पाठसें क्या ! सबुतहुवा, ? इसपर गौर करो, न्यायरत्न इसीबातपर पावंदहै. जो जो श्रावक न्यायरत्नके सामने अदबसें पेश आतेहै उनकों न्यायरत्न कभी सख्त बात नही कहते, मगर जबकोइ गुस्ताखी करने लगताहै तो उसकों बेशक ! सख्त बात कहतेहै,--रायपसेणीसूत्रमें परदेशी राजाकों-केशीकुमार जैनाचार्यने-मूढतराएएं तुमं पएसीराया-कहा, ज्ञातासूत्रमें-नागिला-माहणीकों-अधन्या-अपुन्या कही. आवश्यकसूत्रमें-अविनयी-

शिष्यकों सख्तसुस्तकहना फरमाया, कौनजैनी इनपाठोंकों इनकार-या--जूठ कहसकताहै, ?

जब कोइ जैनमुनि--व्याख्यान वाचना शुरु करतेहै तो अ-वल एसापाठ बोलतेहै,

---

(अनुष्टुप्-छंद.)

अज्ञानतिमिरांधानां-ज्ञानांजनशिलाकया,
नेत्रमुन्मीलितं येन-तस्मै श्रीगुरवे नमः ?,

अज्ञानतिमिरकरके अंधे बनेहुवेजीवोंकों ज्ञानरुपी--शिलाका-करके जिसगरुमहाराजने--अंजनकिया, उनकों नमस्कार हो,--देखिये ! इसमेंभी-" अज्ञानतिमिरांधानां. " एसा पाठहै.--एक बादशाहने बडा आलिशान मकान बनवाया और दरवाजा उसका इतना बडा रखा जो करीब (२५) हाथ उंचा होगा, उसके उपरकेभागमें उमदाकारिगिरी और चित्रकारीबिनवाइकि-जिसकों तमाम लोग देखनेकों आतेथे और देखकर खुश होतेथे, जो कोइ मुसाफिर इसशहरमें आताथा उसमहेल-कों देखनेकेलिये जरुर जाताथा, और उचीनिगाहकरके देखताथा, बा-दशाहने उसदरवजेके उपरले भागमें एक एसीनसीहतकीबातलिखवा दिइथीकि--जिसकी--तारीफ बेमीशालथी बडेबडे हर्फोंमें यहलिखवादि-याथाकि—

☞ " उंचा क्या देखताहे, ? निचा देख ! !
दुनियामें आकर तेने क्या नेंकी किई, ?—"

देखनेवाले इसमिशालकों देखकर शर्मींदे होजातेथे और क-

हतेथे क्या उमदा नसीहत दिइहै जिसकी तारीफकरना दुसवारहै, हरशख्शको मुनासिबहै अपनीकारवाइपर ख्याल करे,—

न्यायरत्न हमेशां न्यायरत्नही रहेगें, किसीके कहनेसे अन्यायरत्न नहीहोसकते, एकशख्शकी तरक्की देखकर दुसरा नाराजरहे यहभी एकजमानेकी खूबीहै, यादरखो ! न्यायरत्नके लेख हमेशां चलते रहेगें, किसीके लेखका जवाब–न–देवे. या–चूप रहे यह ख्वाबमेंभी–नही–समझना,–जो जिसतरह पेंश आयगा उसकेशाथ हम उसीतरह पेंश आयगें,

---

(१९) ☞ (बीचबयान–यांत्रिकविहारके,—)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (१०) पर बयानहै संवत् (१९५९) में शांतिविजयजीने साधुओकों रैलमें बेठनेका मत चलाया,

(जवाब.) जब इरादेधर्मके नावमें बेठनेका जैनमुनिकों हुकमहै तो रैलभी एकतरहकी सवारीहै, नाव पानीमें चलतीहै रैल जमीनपर चलतीहै, बल्के ! जलमें कइतरहके जीव रहतेहै उतने जमीन पर नहीरहते,–अगरकोइ मुनि शौखसे–या–अपने आरामकेलिये रैल सवारी करेतो बेशक ! पापहै, और उसकी मुमानियतभीहै, क्योंकि उसका इरादा धर्मपर नहीरहा.–मगर इरादे धर्मके तपसीलन धर्मकी तरक्कीकेलिये कोइ मुमानियत नही, आजकलके लोगबाग ब–सबबरैलके–अपना वतनछोडकर हजारांह कोशोंपर जावसेहै जहांकि–धर्मका नामनिशानभी नहीपाता, औरवहां कोइभी जैनमुनि उनकों जैनधर्मका रस्ताबतलानेवाले नही मिलते, बल्किन् ! धर्मको छोडकर अधर्मी होजातेहै, उसहालतमें कोइ जैनमुनि रैल-नाव-या-डोलीमें बैठकरवहां जावे और तालीमधर्मकीदेवेतो कोइ नुकशाननही, बल्किन् ! फायदा

है, इसीसबबसें हम रैलमें बेठना मुनासिब समझतेहै, पैदलविहारीमुनि लोगोमें कइ जैनमुनि ऐसे देखेजातेहै जिनकेसाथ श्रावकलोग चलतेहै, बैलगाडी वगेरा शाथ चलतीहै, मुनिलोगखुद जानतेहैकि–यह–कार्य हमारेही सबबसे होताहै, बतलाइये ! बैलगाडी वगेरासे रास्तेमें सूक्ष्म जीवोंका नाश होताहै–या नही, ? कइजैनमुनि बडीसफरमें डोलीमें बेठकर विहार करतेहै, कहिये ! डोलीकों उठानेवाले रास्तेके कीडोंकों कैसे बचा सकेगे, ? उनको तो बोजा उठाकर चलना पडताहै, कइ जैनमुनि ऐसेभी देखेजातेहै जिसमुल्कमें उनोंकों जानाहो. और–वहां उनकीश्रद्धाके मुताबिक बर्तावकरनेवाले श्रावक–न–हो–तो–अपनी श्रद्धाके अनुरागी श्रावकोके शाथ विहारकरतेहै. क्या आत्मार्थी पूर्ण-संयमी पैदलविहारी अकेले विहार–नही–करसकते, ? अगर कहाजाय इरादेधर्मके भावहिंसा नही. और विना भावहिंसाके पाप नही, तो फिर इसीसडकपर आओ, उत्कृष्टता किसबातकी रही, ? अगर उत्कृष्टसंयमी बनना मंजूरहै–तो–पहाडोकी कंदरामें–और–बनखंडमें गुजर करना चाहिये, शहरमे आनेकी क्या जरुत ? तीनतीन चारचारवर्ष एकही–शहरमें बेठरहना यहकौनसे जैनशास्त्रका हुकमहै, ? अगर कहा जाय लाभदेखकर इरादेधर्मके बैठेरहतेहै तो फिर इसीतरह दूसरी बातभी समझलो,—

पृछाप्रतिवचन पृष्ठ (१७) पर मजमुनहैकि–शांतिविजयजीकी –तो–कोइ–गिनतीही नहीहै. श्रावकमंडलसें बहार बहार फिरतेहै.—

(जवाब.) शांतिविजयजीकी कोई गिनति नही तो तुम लोगोकी–कौनसी गिनती है. और कौन कहताहै शांतिविजयजी श्रावक मंडलसें बहार बहार फिरतेहै, ? क्या ! गुजरात–मारवाड–पंजाब–राजपुताना–पूरव–मध्यखंड–मालवा–वराड–खानदेश–और–दखन-श्रावकमंडलकी

आबादीके मुल्क नही ? जहांकि–शांतिविजयजी बसातकें विचरे और और अबभी विचररहेहै, श्रावकमंडलके ऐसे थोडेही मुल्क बाकी रहे होगें जहांकि–शांतिविजययजी–न–विचरेहो,—

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (१७) पर तेहरीरहैकि–मनिश्रीआत्मारामजीको–यहबात नही सूझ पडीथी, ? और उनके शिष्य शांतिविजयजीके नेत्रभी तबतक नही खुलेथे ? नही तो दोनोंजने सलाह करते–रैलमें बेठनेकी आचरणा चलाडालते,—

(जवाब.) बेशक ! महाराजश्रीआत्मारामजी–आनंदविजयजीको सुझ पडीथी, जभी तो चतुर्थस्तुतिनिर्णय किताब–बनाकर––तीनथुइकी प्ररुपणाकों गलत बतला गये, जिससे तमाम मुल्कोंमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंका शक रफा हुवा, और अपने धर्मपर पायबंद रहे, देखिये ! सुरत–जैनश्वेतांबर चारस्तुति माननेवालोने कैसा उमदा ठहराव किया, ? लेखक इसपर ख्यालकरे, !–और–इसबापरभी गौर करेकि-यह-जवाबभी कैसा उमदाहै, जिसकों पढकर अकलमंद लोग ताज्जुब करेंगे, शांतिविजयजीके नेत्र हमेशां खुलेहै देखलो ! किसकदर तुमारे सवालोंके माकुल जवाब देतेचले जारहेहै, अगरकोइ हजार चतराइ करे मगर अकलमंदोके सामने किसीकी चतराइ नही चल सकती. अगर कोइ कहे फलाने मुनि रैलसवारी क्यौं नही करते ? फलाने पैदल क्यौं चलतेहै, ? जवाबमें मालूमहो इसकी फिक्र कोइ क्यौं करे, ? अपनीअपनी कारवाइपर खयालकरना चाहिये, जो–जैसा––करेगा वैसा फल पायगा,—

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (१८) पर दलीलहै रैलयात्रामें गृहस्थलोगोकाभी धर्म निर्वाहित नही होसकता तो अणगारधर्म कयौं कर निर्वाहित होसकेगा, ?

(जवाब.) कौनकहताहै रैलसवारीसें धर्मनिर्वाहित नहीहोसकता, अपना धर्म सबकों प्यारा होताहै, चाहे दुनियादार हो–या–साधु हो, अपना धर्म रखेगा चैन पायगा, रैलसवारीमें खानपान–न–करे और जहां उतरे वहां खानपान करे तो धर्मकैसे जासकताहै, ? धर्मरखनेवाले बडीबडी मुसीबतमेंभी अपना धर्म रखतेहै–तो रैलसवारीमें धर्मरखना कौनमुश्किलकीबातहै, ? चेडाराजाने–कौणिकराजाके सामने लडाइके वख्तभी अपनाधर्म नही छोडा था,

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (१८) पर बयानहै शांतिविजयजी चाहे हम आंखपर चश्मा लगावे, स्वछतंबेजका प्रावरण ओढे, और रैलगाडीमें पेतालीसघंटोमें पश्चिमसमुद्रसे पूरवसमुद्रतक विहारकरडाले, और संयमी महाव्रती साधु कहलानेका होसिला पुरा करे–ये–दोंनों बातें नही होसकती.

(जवाब.) क्या नही होसकती ? बेशक ! इरादेधर्मके होसकतीहै. देखलो ! और आगे जरा इसइबारतकों पढलो, मालूमहोजायगाकि–संयमी–महाव्रतीकहलानेका होसला इसतरह पुराहोताहै, शांतिविजयजी जो चश्मालगातेहै धर्मऔर आत्मरक्षाकेलिये लगातेहै, जिसकी आंखोंमें कमरोशनीहो, शास्त्रके हर्फ-न-बचसकतेहो-ऐसेमुनि-चश्मा-न-लगाव और जीवोकी हिंसा उनसे होतीरहे क्या ! इसबातकों अछीसमझतेहो, ? जीवरक्षाकेलिये जैसे दूसरे उपकरणहै चश्मेभी एक तरहके उपकरणहै, स्वछतंबेजका प्रावरण औढतेहै सो इसकी जैनशास्त्रोंमें कोइमुमानियतनही, देखलो ! लाखलाख रुपयोंके रत्नकंबल पेस्तरकेमुनिलोग रखतेथे प्रवचनसारोद्धारका हुकमहै और उसका यहां पाठ बतलातेहै देखलो, !

(पाठ प्रवचनसारोद्धार गाथा (८०४) द्वार (१११)—)

मुल्लजुअं पुणतिविहं–जहन्नयं माझिमं च उक्कोसं,
जहन्नेण अठारसगं–सयसहस्सं च उक्कोसं,

(माइना.) कपडेका मौल शास्त्रोमें तीनतरहकाफरमाया, जघन्य-मध्यम उत्कृष्ट, जिसमें जघन्य अठारहरुपयेका और उत्कृष्ट, लाखरुपयेका कपडा रखना मुनिकों हुकमहै, अपने अपने लाभांतरायकर्मके दूरहोनेसें जिसकों जो चीज मीले उसपर दूसरोंकों नाराज होना फिजुलहै, जिसबातका हुकम शास्त्रोमें दर्जहै उसका इनकार कौनकरसकताहै, ? देखलो ! लाखरुपयेका रत्नकंबल रखना फरमाया तो-नव -या-अठारांहरुपयेके कंबलकी कौन गिनतीरही, ? विद्यासागरने सबुत प्रवचनसारोद्धारका देदिया जिसकी ताकातहो रद करे, रद तो क्या करेगें ? मंजूरकरना पडेगाकि-विद्यासागरका कहना ठीकहै,—

रैलसवारीमें पश्चिमसें पूर्व समुद्रतक (४५) घंटेमें जानेकीबात जो लिखी जवाबमें मालूमहो धर्मकी तरक्कीके लिये—

इससेभी जलदी चलनेवाली

(रैलमें)

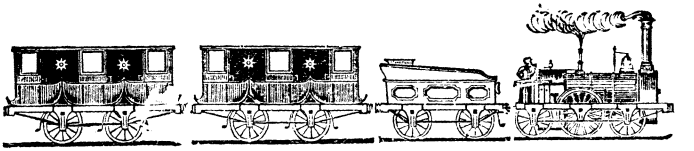

बनपडेतो (३५) घंटमें जासकतेहै, पेस्तरके जमानेमें जब आकाश गामिनीविद्यामौजूदथी धर्मकी तरक्कीकेलिये मुनिलोग बजरीये उस विद्याके (१) घंटेमें हजारां कोश जातेथे, तो (४५) घंटेकी बात कौन गिनतीमें रही ? संयमीकहलानाभी मूर्छारहित बर्तावकरनेवालोकाकाम

है, जोशख्श-अपने ज्ञानदर्शनचारित्रमें पावंदहै उसकों असंयमी कौन कहसताहै, ? गुणवान्की सबजगह इज्जतहोतीहै, चाहे कोइ दूसरा उनकी इज्जतहोती देखकर नाराजरहे—गुणवान्का उससें कोइ नुकशान नहीं. इज्जतदारोंकी इज्जत किसीके कहनेसे कम नही होसकती,—चाहे विद्यासागर हो—या—कोइ दूसराहो—जो—संयम पालेगा वह संयमीकहलायगा, शांतिविजयजीके संयमी कहलानेसें दूसराकोइ नाराज रहे यहभी-एकजमानेकी खूबीहै.—

पृछाप्रतिवचम पृष्ट (१९) मजमूनहैकि-रैलयात्रामें पींडेषणा दोष कैसेटलसकता होगा जिसबातका शांतिविजयजीकों घमंडहै किंतु संयम पालनायही शास्त्रकासारहै,—

(जवाब.) अगरसंयमपालनाहीसारहैतो श्रद्धा और ज्ञानक्यों मजूररखतेहै? पंडितोसें क्यों ग्रंथबनातेहै? अकेलासंयमपालकरहीबैठेरहनाथा, तत्वार्थसूत्रमेंतोसम्यक्दर्शनज्ञान और चारित्र-तीनोंकेमिलनेसें मोक्षका मार्ग कहा.—और लेखकपुरुष लिखतेहै संयमपालनाही शास्त्रका सारहै, क्या कहना ! लेखकहो-तो-ऐसेही हो, मगर याद रहे ! जैनशास्त्रोंमें अकेला चारित्र कारआमद नहीं फरमाया, शुद्धश्रद्धा-शुद्ध ज्ञान-और शुद्धचारित्र-तीनोंके मिलनेसेंही काम चलेगा, जो लोग अकेले चारित्रकोही सार बतलातेहै भूलकरतेहै, शिवाय ज्ञानदर्शनके अकेला चारित्र क्या काम देसकताहै, ? शास्त्रोंमें हरजह लिखाहै श्रद्धा परमदुर्लभहै, बादउसके ज्ञान-और-ज्ञानकेपीछेंचारित्रहे, रैलमें बैठे खानपान-न-करे और जिसगांवमें जाय वहां शुद्ध आहार लेवे फिर पींडेषणा दोष कैसे लगेगा, ? जोजो मुनि-अपनीश्रद्धाके अनुरागी श्रावकोके शाथ विहार करतेहै—वहां पींडेषणा दोष कैसेटलसकताहोगा इसबातपर कोइ खयाल करे,—और जिसबातका शांतिविजयजीकों घमंड बतलाते हो मगर धर्मोपदेशदेना आम-मुनिलोगोंकी फर्जहै, शांतिविजयजी इसीफर्जकों अदा कररहेहै, इसमें घमंडकी कोइ बात नही.

पृछाप्रतिवचनपृष्ट (१७) परतेहरीरहै जो शिथिलाचारीहोतेहै-वे-अपने शाताकेलिये अनेक अपवादपदका बहाना करके बुरीबुरी प्रतिसेवना करतेहै, उनके दिखलाये हुवे अपवादिकशास्त्रप्रमाणोंकों देखकर भव्यप्राणियोंकों विस्मित-न-होना चाहिये,—

(जवाब.) शिथिलाचारीकौनहै ? और अपवादमार्गका बहाना कौन लेताहै ? इसपर फिर गौर करलो ! आजकाल ऐसे कौन जैनमुनिहै-जो-अपवाद मार्गका सहारा-न-लेते हो, ? ख्याल करो ! उत्सर्ग मार्गमें तो जैनमुनिकों उद्यान-बनखंड-या-पहाडोंकी गुफामें रहना फरमाया. आज शहरमें आनकर रहतेहै कहिये ! यह उत्सगमार्गहुवा-या -अपवादमार्ग, ? उत्सर्गमार्गमें जैनमुनिकों तीसरेपहर गौचरी जाना कहा, सौचो ! आज ऐसाकौनकरताह, ? उत्सर्गमार्गमें जैनमुनिकों शून्यागार-बनखंड-या-श्मशानवगेरामेंजाकर ध्यानकरना कहा आज ऐसा कौन करताहै ? उत्सर्गमार्गमें पात्रकों लेप-न-लगे वैसी लुखासुखा आहारलेनाफरमाया, खयालकरो ! आजऐसा कौन करताहै, ? उत्सर्ग मार्गमें रोग पैदा हो-तो समताभाव करना मगर दवा नही लेना कहा, आज ऐसा कौन करताहै, ? अगर कहाजाय वैसाजमाना आजकल नही रहा. न-वैसीताकात रही इसलिये जैसा जमानाहै-वैसी-क्रिया करतेहै-तो-फिर इसी सडकपरआओ, ! उत्कृष्टता किसबातकी दिखलाते हो ? विद्यासागरभी-तो यही फरमातेहैकि-द्रव्यक्षेत्रकालभावदेखकर चलो, कौरीबातें बनाना क्या ! फायदा, ? अपवादमार्ग-विदून किसीका काम नहींचलता, अगरकोइ कहे हम-कमजोर मार्गकों मंजूर नही करते तो-बतलावे-शहरमें आनकर क्यों रहतेहै, पहाडोंकीगुफा-और-बनखंडमें जाकर क्यों नही रहते,-खानपानकी चीजें वहांही मिलजायाकरेगी,अगर-न-मिलेतो-समताभाव करना, क्योंकि-समताभावमेंरहना मूनिका

धर्महै, और यहभीबातहैकि-लेखकपुरुष उत्सर्गमार्गी ठहरे, मगरमालूम होगया लेखकका उत्सर्गमार्ग कौरीबाते बनानेवालेहै, और यहभी लेखकबतलावे शिथिलाचारी किसकों कहतेहै और कठिनाचारी किसको, ? और इसबातकोभी जाहिरकरेकि-अपवादमार्गका सहारा तुम लोगलेतेहो-या-नही ? कोरीबातें बनाना सबकोइ जानतेहै मगर उस मुताबिक चलनेवाले बहुतकम निकलेगे, इनसाफकरमाताहै जैसाद्रव्यक्षेत्रकालभाव देखो उसमुजब बर्ताव करो, बडीबडीबातें बनानेसेकोइकाफायदानही. यूंतो अपनेअपने खयालमें-हरकोइमुनि उत्कृष्टसंयमी बननाचाहतेहै. और यहसमझतेहैकि-हम-जैसीक्रिया करतेहै वैसी कोइ नहीकरता. मगर विना शुद्धश्रद्धा और ज्ञानके क्रिया कोइ कामनही दे शकती, लेखकपुरुष लिखताहैकि-अपवादपदका बहाना लेकर बुरी बुरी प्रतिसेवना करतेहै उनके दिखलायेहुवे अपवादिकशास्त्रप्रमाणोकों देखकर भव्यप्राणीयोकों विस्मितहोना-नहीचाहिये,-जवाबमें मालूमहो-जोकोइसाधु-अपनेश्रद्धानुरागीश्रावकोके शाथविहारकरे-उसको-उत्सर्ग मार्गगामी-कहना-या-अपवादमार्गी कहना ?-और-यहभी बतलावेकि--श्रावक-मकान किराये लेवे-ओर-उसमें जो-मुनि-रहे-यह उत्सर्गमार्गहै -या-अपवादमार्ग, ? अपवादका बहाना कोनलेताहै-और-अपवादिक शास्त्रके प्रमाणकौन बतलाताहै, इसपर लेखकपुरुष फिरगौरकरे, कोइ हजार चतुराइखैले मगर अकलमंदोकेसामने एकभीनही चलशकती,

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (१०) पर दलीलहै शांतिविजयजीने ऐसी प्ररुपणाकरी श्रावकहै-सो-साधुओंकों दुकानसे मिठाइ वगेरा तुलवाकर दिलवादेवेतो कुछदोष नही.

(जवाव.) शांतिविजयजीने ऐसीप्ररुपना नहीकिइ, अगर लेखकके पास कोइसबुतहो-तो-पेश करे, विनासबुत ऐसालिखाणकरना

लेखककेलिये मुसीबतका सामना होगा, इसलिये आइंदे खयाल रखे. और-ऐसे लिखाणोंसें परहेज करे,—

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (१०) पर बयानहै गृहस्थोंसें वैयावच्च-कराना, साबुनसें कपडेधोना-नोकरसें भार उठवाना इत्यादि अनेक तरहकी शास्त्रविरुद्ध प्ररुपणा शांतिविजयजीने करी.

(जवाब.) जो जो जैनमुनि-ग्रंथबनवातेहै-पंडितलोग-साथ रहतेहै, मणोबंदपुस्तक उनकेलिये बैलगाडीमें या-रैलमें आतीजातीहै, क्या ! मुनिलोग-नही जानतेकि-ग्रंथबनानेके सबब ये-ये-क्रियाहोतीहै, जैनशास्त्रमें बयानहै-कोइ कार्य करना, कोइकार्य दूसरेसे करवाना-या-उसकेलिये अनुमतिदेना-तीनो एक बराबरहै, बतलाइये लेखकमहाशय ! इसकार्यकों उत्सर्गमार्ग कहना-या-अपवाद मार्ग ? बातेंतो बडीबडी बनातेहो-मगर-कुछ जैनशास्त्रकीभी मालूमहै, ? अगर आपकों मालूम न-होतो-गुरुलोगोके पास जाकर दर्याफत किजिये. और दिलमें खयालकिजिये कैसा उमदाजवाबहै जिसकोपढकरतुमभी ताज्जुब करोगे, शांतिविजयजीने कोइशास्त्रविरुद्धप्ररुपना नही किइ, उनकी जितनीबातेंहै शास्त्रसबुतसेंहै, गृहस्थोसे वैयाव्रत्यकरानेके बारेमें जवाब सुनिये, ! पंचाशंकसूत्रमें बयानहैकि-श्रावक-मुनिकी-वैयाव्रत्य (यानी) खिदमतकरे, इसवख्त पंचाशकसूत्र हमारे सामने नहीहै, होतातो पाठभी यहां लिखदेते, सोचो ! कोइ मुनिमहाराज बीमार हालतमेंपडेहो और उसवख्त दूसरेमुनि उनकेपास हाजिर-नहो-तो-उसमुनिकी खिदमत श्रावक करे या-नही, !-अगर कहाजाय-न-करेतो बतलानाचाहिये श्रावकोकों जैनशास्त्रोमें श्रमणोपासक क्यों कहे, ?-साबुनसे कपडे धोनेके बारेमें जवाबलिजिये, ! क्षारसे कपडाधोना जैनशास्त्रोमें मुनिकेलिये हुकमहै, और साबुन एक तरहका क्षारहै, इसलिये साबुनसें कपडाधोनाभी खिलाफ

हुकमशास्त्रके नही, बोजा उठवानेके बारेमें खयाल करो ! कोइ मुनि बीमारहो-और-उनकों एकगांवसें दूसरेगांव जानाहो-उसहालतमें-कपडे-या-पुस्तकपंने-दूसरोंसे-न-उठवावेतो-क्या-वहांही धरे रहनेदे, ? और अकेले चले जाय, ? क्या ! खूबबातहैकि-जिसकोकोइभी अकलमंद मंजूर नही करसके, अगर कहाजाय इरादेधर्मके दूसरेसे-वह-बोजा उ-ठवायाजायतो कोइ हर्जकी बातनही, तोफिर इसीसडकपर आओ, ! उत्कृष्टता किसबातकी रखतेहो. ? घूमघामकर अपवादमार्गपर आना और बातें बडीबडी बनाना-यह-अकलमंदोके सामनेनही चलसकता.

---

(२०) ☞ (दरबयान--मानवधर्मसंहिता किताबके.)

पृछाप्रतिवचन किताब पृष्ट (२१) पर मजमूनहै मानवधर्मसं-हिता-ग्रंथ-जोछपाहै, यदि अवसरमिलातो उसकीभीखबर लिइजायगी, (जवाब,) हम राजेंद्रसूर्योदय-औरअभिधान-राजेंद्रकोश-जोकि-अबतक बनरहाहै-उसकीभी खबरलेनेकों मुस्तेजहै, जिसकेदिलमें जो उमेदहो पुरीकर लेवे, मालूमनहीकि-विद्यासागर-तुमारे लेखपर दशगुनीटीका करनेका तयारहै, मानवधर्मसंहिताकी कोइ क्याखबरलेगा, ? उसकोंछपे आज सातवर्ष होगये किसीकीताकात-न-हुइकि-उसकी कोइ खबरलेता, बल्के ! कइमहाशयोने उसकेबारेमें तारीफलिखि, और छपेबाद फौरन बीक गई,—

---

(२१) ☞ (बीचबयान–विद्यासागरके लेखोंका,)

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (११) परतेहरीरहै–शांतिविजयजी–जैन पत्रमें--कइदफे शास्त्रविरुद्ध लेखलिखतेहै इसकाभी जवाब पंचांगीके अनुसार दिया जावेगा.

(जवाब.) अगर पंचांगीके मुताबिक जवाबदेनेकी ताकात रखतेहो तो-जवाबदो-प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरना किससूत्रकी पंचांगीमें लिखाहै. ? जवाबदेना मुश्किलहोगा. जबानीजमाखर्चसे कामनहीचलता, कागजरुप मैदान सामनेपडाहै, जिसकी मरजीहो-अपनीअकलरुप घोडा दोडालेवे,—शांतिविजयजीके लेख किसजगह शास्त्रविरुद्धथे. ? जाहेर क्यौं नहीकिया. ?—अबभी जिसकी ताकातहो-शांतिविजयजी के लेख शास्त्रविरुद्ध सबुत करदेवे, हम उसकों बहादूर समझेंगे,

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (१८) पर दलीलहै जैनपत्रमें निरंतर शांतिविजयजीके लेखोंकी भरमाररहतीहै और आगे यहभी लिखाकि--शांतिविजयजीकी मतिकल्पना क्याक्या उगलतीहै, ?—

(जवाब.) शांतिविजयजीकी मतिकल्पना अबतक क्या देखी है ! !—अभी तो अव्वलही कामपडाहै, आगे देखतेजाओ ! क्या क्या ! ! मजा दिखलातेहै, ? शांतिविजयजीकी मतिकल्पनाका मजा अगाडी मालूम होगा, देखलो ! पांचकिताबोंके लेखोंका-और-कइइस्तिहारोंका माकुलजवाब एकहीशाथ तुमकों देदिया, शांतिविजयजीके लेखोंकी भरमार जो जैनपत्रमें रहतीहै वहीतो तुमकोंनागवार गुजरती होगी, अगर ुमारी ताकातहो-तो-तुमभी दूसरा-सप्ताहिकपत्र-निकालो, फिर हमारे तुमारे लेख खूबचलतेरहेंगें, पश्नोत्तरपत्रिकामें जाहिरहुवाथाकि-शुद्धसिद्धांतरहस्यमाासेकपत्रमें जवाबदियाजायगा, यानी शुद्धसिद्धांतरहस्य नामसे मासिकपत्र निकलेगा, मगर आज उसको निकलते वर्षानुवर्ष-बीतगये, अबतक उसका जन्मभी नहीहुवा, लेखोंकी भरमार कोइ क्या ! रखेगा ! ! लेखोकी भरमार रखनाभी तो अक्कलके ताल्लुकहै,

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (२३) पर बयानहै शांतिविजयजीके लेखोसे जैनपत्रका अधिपति-पत्र क्यौं भरताहै, ?

(जवाब.) शांतिविजयजीके लेख इन्साफीहोतेहै इसीलिये उनकेलखोसे जैनपत्र भराजाताहै,–शांतिविजयजीकेलेख जैनपत्रमेंछपे औरपृछाप्रतिवचनके लेखककों नागवार गुजरे यहभी एक उसके भाग्यकी बातहै,

पृछाप्रतिवचन पृष्ट (२६) पर मजमनहै समग्रश्रुतकासार चारित्रहै उसकी तर्फदृष्टि फेरो जहां वह चरणरत्नहै वही समग्रसामायिकादि-बिंदुसारांतश्रुतहै, वह–न–हुवातो कुछ–न–हुवा,

(जवाब.) अगर समग्रश्रुतकासार चारित्रही है–तो–ज्ञान–और–श्रद्धा कुछकार्यकारी न रहे, फिर ग्रंथबनानेकेलिये पंडितलोगोकों रखना, उनकों तनख्वाह देना, मंणोबंदपुस्तके इधरउधर मंगवाना यह सब आडंबर क्यौं, ? तुमतो एकेलेचारित्रकोंही सारबतलातेहो, और यहभी कहातेहोकि–चारि –न–हवा–तो कुछ–न–हुवा, फिरतो ग्रंथबनाना बेंकारहोगया, अकेले चारित्रकोंही इख्तियारकरके बैठरहनाचाहिये, लेखकपुरुष बातेंतो बडीबडी बनातेहै मगर अबतक जैन आगमका पुरेपुरामतलब नहीपासकेहै. जैनशास्त्रोमें शुद्धश्रद्धा–शुद्धज्ञान–और–शुद्धचारित्र तीनोंकेमिलनेपर मोक्षका मार्गकहा, अकेलेचारित्रसें मोक्षनहीहै,

श्रामण्यरहस्य–पृष्ट (१५) तेहरीरहै वर्त्तमानमेंभी देखो ! न्यायरत्न खडेहुवे, ज्ञानप्रकाशकिया. गाडीमेंबेठनेसें कुछदोष नही, छापा छपवाना कागज लिखना, वगेरा वगेरा,

(जवाब.) पंडितोंकी मददसे ग्रंथ बनवाना. सुरतके संघने जब अगत्यका ठहराव किया–तब–एक जैनबंधुके नामसे "जाहेरखबर"

छपना, एकसत्पक्षग्राहीके नामसे–" माहाराजश्री राजेंद्रसूरिनी त्रण थुइ अने चारथुइ संबंधी चरचा " का-छापाछपना विवेचनप्रिय जैन बंधुके नामसे–" श्रीसंघने सत्यबातनी सूचना"–लेख छपना, यहभी–तो ज्ञानका प्रकाशही कियाहै,–श्रीपूज्यजी–श्रीधरणेंद्र–सूरिजी–जोकि –सनातन–जैनश्वेतांबर–चारस्तुतिकी–श्रद्धामें पावंदथे–उनोने क्यौं तीनस्तुतिकी प्ररुपना नहीकिइ, क्या !–वे–तीनस्तुतिकी प्ररुपनाकरना नही जानतेथे?–मगर–वे-कैसेकरे ! क्यौंकि–जैनशास्त्रके पुरेमाहितगारथे, न्यायरत्नका ज्ञानप्रकाशदेखनाहो–तो–उनकी बनाइहुइ मानवधर्मसंहिता–जैनसंस्कारविधि–रिसालामजहबढुंढिये—और–त्रिस्तुतिपरामर्श–जो–आपलोगोकेसामनेमौजूदहै उनसें देखो, और–वे–धर्मकी तरकी-केलियेखडेहुवेहै इसमें कोइ शक नही,—

(चीठी लिखनेकेबारेमें कल्पभाष्यवृत्तिका पाठहैकि.)

जथ्थविय गंतुकामा–तथ्थवि कारिंतितेसिंनायंतु आरखिखयाइ तेविय–तेणेवकमेण पुछंति,—

(वृत्तिः) यत्रापि राज्येगंतुकास्तत्रापिये साधवोवर्तंतेतेषां लेखप्रेषणेनसंदेशप्रेषणेन–वा–सविज्ञातुंकुर्वंति, यथावयं इतोराज्यात् तत्रागंतुकामा अतोभवद्भिस्तत्रारक्षकान् ततःपृछति, यदाह–तैरनुज्ञातं भवति तान्साधून् ज्ञापयंति, आरक्षितादिभिरत्रानु ज्ञातमस्ति भवद्भिरत्र–आगंतव्यं, एषनिर्गमने प्रवेशेच विधिरुक्तः

(माइना.) जिसराज्यसे साधुलोग दुसेरराज्यमें जानाचाहते हो–तो–पेस्तर उसराज्यमें ठहरेहुवे अपने साधुओंकों लेखभेजकर–या

–संदेशा कहलाकरपुछलेवेकि–वहांकेराज्यरक्षकोसें दर्याफतकरो हम वहां आनाचाहतेहै, वे–साधु-वहांकेराज्यरक्षकोंसें पुछे–और–अगर उ-उनकाहुकमहोवे-तो–उनकोलिखे, बेंशक ! आओ ! ! ख्याल करो ! कल्पभाष्यवृत्तिमें धर्मकामकेलिये साधुलोगोको चीठीलिखनेका हुकमहै–या–नही, ?–अगरहै–तो–कुबुलकरनाचाहिये, दुनियादारीकेलिये चीठीलिखना बेंशक ! मनाहै, क्योंकि–मुनिलोगोने दुनियादारीकोंछोड दियाहै,–याद रहे ! न्यायरत्नकेलेखहमेशांचलतेही रहेगें, तुमारेलिखनेसें–वे–बंद–न–करेगें, जोलोग-शास्त्रके फरमानेपर अमलकरनेवालेहै, किसीकेकहनेपर खयाल नही रखते,

श्रामण्यरहस्य पृष्ट (१९) पर दलीलहै जैनपत्रमें प्रश्नोत्तर न्यायरत्नके देखतेहै–वे–सर्वप्राय; सूत्रविरुद्ध जैनसिद्धांतकों कलंकित करतेहै, लोग–तो–जावनीभाषा–बांचकरप्रसन्नहोतेहै, किंतु सूत्रकामर्म कुछ समझते नही,—

(जवाब.) सूत्रकामर्म जाननेवालेतो–एक–तुमहीहो, दुसरे सब अजानहै, क्याखूब ! न्यायरत्नके सवालजबाब अगरकोइ शख्श शास्त्रविरुद्ध सबुत करदेगा उसरोज देखलिया जायमा, और उसकों बहादूर समझाजायगा, हालतो कारोबारेंही चलरहीहै, न्यायरत्न जो उर्दूजबान अमलमेंलातेहै सबब उसका यहहैकि–उनकेलेख–आमहिंदमें पढेजातेहै, अगर-वे-अकेलीगुजराती–मालवी–मारवाडी–पंजाबीजबान लिखेतो–आमलोगोकों फायदा कैसे हो, ?—

---

(२२) ☞ (बयान ज्ञानपढनेकेबारेमें,—)

श्रामण्यरहस्य पृष्ट (११) पर मजमूनहै ज्ञानपढनेका बहाना लेकर आचारछोडदेतेहै, बनियेलोग भोलेहै पढेमात्रकों पंडित मानतेहै

आचारभ्रष्ट–और–गुरुआज्ञा बहारका महादोष–सो–कौनदेखे ? दोनो डूबते है,—

(जवाब.) श्रावकलोग भोलेहै जभीतो नयेमजहबकों इख्तियार करलेतेहै, ज्ञानपढनेके बहानेकिसने आचारछोडा उसकानाम जाहिरमें आनाचाहिये, पढेहुवेकोंपंडित आमलोग मानतेहै, क्या ! पढेहुवेकों–न–मानेतो अनपढकों पंडितमाने ? क्याखूब लेखकहैकि–जिनकेलेखकी-तारीफ कोइबयान नहीकरसकता, हरेककोममें भाले-चतर--इल्मदार-जानकार-और-अजान सभीतरहके लोग होतेहै, एकबनियोपरही क्याबातहै ? आचारभ्रष्ट–और–गुरुआज्ञाके बहारकौनहै इसबातकों आमजैनश्वेतांबरकोमजानतीहै, श्रद्धामें फर्क किसनेडाला ? और अधर्ममें कौनडूबतेहै ? इसबातकोंभी–आमलोग ब-खूबी जानतेहै,—

प्रश्नोत्तरपत्रिका पृष्ट (१०) पर तेहरीरहै जिसकिसीकों अधिकजाननेकी इछाहोतो पत्रआनेसें पूर्वधरोके वचनसें–वा–आत्मारामजी प्रमुखके ग्रंथोसे सबुतीसहित शुद्धसिद्धांतरहस्य-नामकमासिकपत्रमें-जवाब दिया जायगा,

(जवाब.) शुद्धसिद्धांतरहस्य–मासिककों निकलतेतो वर्षानुवर्ष बतीतहोगये,–न–मालूम ! उसकाजन्म कबहोगा, ?–उसमासिक जारीकरके अगरकोइ-महाराजश्रीआत्मारामजी-आनंदविजयजीके-नाम या-हमारेपर कछ लिखेगा उसकों माकुलजवाब मिलतारहेगा, यहां जबाबकी कोइकमी-नहीहै,–चाहे कोइ पूर्वधरोके वचनोसें-द्वादशांगीसें--या-पंचांगीसें जिसतरहपेंशआनाहो-आवे, हमारेपास सबतरहकेमशाले तयार है,—

(२३) ☞ (बीचवयान पर्युषणनिर्णयपत्रिका.

पर्युषणनिर्णयपत्रिका पृष्ट (२) पर दलीलहै जैनपत्रद्वारा कइ महाशयोके पुछेहुवे प्रश्नोंकी भरमाररहतीहै उसमें जोकोइ सिद्धांतविपरीत बातहै उसकों अज्ञमंदबुद्धिवालेभव्य–मान–न–लेवे.

(जवाब.) खिलाफतेहरीरजैनसिद्धांतके एकभीबात विद्यासागर नही लिखते. लेखोकी भरमाररखना अकलकेताल्लुकहै जिनोने शास्त्रपढनेकी पुरीकसरत किइहोगी वहीलेखोंकी भरमार रखसकेगे. विद्यासागरके लेखोसें आमलोग फायदा उठासकतेहै, क्यौंकि–उनके लेख इन्साफीहोतेहै, लेखककों अगर विद्यासागरके लेख नागवारगुजरतेहो तो उनकेलेखोसें परहेजकरे, विद्यासागरका कोइनुकशान नही,

पर्युषणनिर्णयपत्रिका पृष्ट (१०) पर मजमूनहै आषाढसुदीपुनमका पर्युषणहै, वह उत्सर्ग है, अपवादसेतो भाद्रवसुद पंचमीका है, पृष्ट (१४) पर यहभी लिखाहै यह प्रश्न मणीलाल धोलेरावालोने न्यायरत्नकों पुछाथा, उसकों और हमारे लेखकों बांचकर निर्णयकरियेकि–सत्य–असत्य लेख कौनसा है, ?

(जवाब.) बांचकर देखलिया, तुमारा लेख न्यायरत्नके लेखके सामने कमजोरहै,–न्यायरत्नने जो जैनपत्रमें मणिलाल धोलेरेवालोंके सवालोका जवाब दियाथा बहुतदुरुस्तथा, आजतक उसकों किसीने गलत नही फरमाया, लेखकने पूर्वपक्ष क्यौं–न–लिखा. ? मगर लिखेक्या ? जो बात सचहो उसकों गलत कौनकहसकताहै, ?: अकलमंदोकों लाजिमहैजिसकाखंडनलिखे पूर्वपक्ष बतलाकर उत्तरपक्ष देवे, जैसाकि–हमने इसकिताबमें दियाहै,

पर्यूषणानिर्णय पत्रिका पृष्ट (१६) पर बयानहै न्यायरत्ननाम धरातेहै वचन सब अन्यायके निकलतेहै,

(जवाब.) अन्यायके वचन उनकेहै–जो–प्रतिक्रमणमें–तीनथुइकरनेकी प्ररुपणा करतेहै. और पाठ उसका पंचांगीमें बतलासकतेनही. न्यायरत्नका कोइहर्फ बेइन्साफकानही. अगर न्यायरत्नके वचन अन्यायकेहोते-तो-उनकेलेखोंकी तरकी मुल्कोंमें क्योंहोती,? न्यायकेलेख लिखतेहै जभीतो लोग उनकों न्यायरत्नकहतेहै,

पर्यूषण निर्णयपत्रिका पृष्ट (१७) पर तेहरीरहै, है ! सुज्ञपुरुषो ! ! तीर्थकरजेसेते यह निर्दोष बनता चाहतेहै.

(जवाब.) बेशक ! तीर्थकरदेवोको–आचार्योंकों–और–साधुओकों जोकि–धर्मके नायब थे–बुराकहनेवाले लोग–बुराकहतेहीथे. दुनियां कभी एकरंग-न-हुइ-न-होगी. इस बातमें न्यायरत्नने कुछगलत नहीलिखाथा, जिसबातकों इन्साफ सचफरमाताहो उसकों कौन गलतकहसकताहै, ? सोचो ! अभव्यजीव–जोकि–धर्मसे ऐतराजथे तीर्थकरदेवोंकों तीर्थकरतरीके नही मानतेथे, उससे तीर्थकरोंका क्या नुकशानथा, ? इसीतरह न्यायरत्नकों कोइ न्यायरत्न-न-समझेतो न्यायरत्नका क्या नुकशानहै,? कुछभीनही,—

पर्यूषणनिर्यपत्रिका पृष्ट (१७) पर दलीलहै जो गीतार्थ-न-हो –और कहे–मैं–गीतार्थहु–वह–सित्तेरकोडाकोडी–सागरोपमकी स्थितिवाला महामोहनीकर्म उपार्जन करताहै,—

(जवाब.) जो-गीतार्थहै-और-गीतार्थ कहलावे उनको कोइ महामोहनीकर्म नहीबंधता, महामोहनीकर्म-उनकों-बंधताहै-जो-अधर्मकों धर्मकहे, शास्त्रकेहुकमको कुबुल-न-करे-और खिलाफ हुकमतीर्थकरगणधरकेनयामजहबजारीकरे,

पर्यूषणनिर्णयपत्रिका पृष्ट (१८) पर मजमूनहै धर्मोपदेशकेलिये रैलविहारकरना–शास्त्रमें कहाहै–तो–क्या ! आत्मारामजीने उनग्रंथोकों नहीदेखाथा, ? जो चलनेका खेद सहन-किया,–वह गाडीमें बेठकरजाना क्या नही जानतेथे, ?—

(जवाब.) बेशक ! वे–जानतेथे तभी–तो–तीनथुइकी प्ररुपणाको गलत बतलागये. और चतुर्थस्तुतिनिर्णयभागदुसरा–बनाकरजाहिरकरगये जिससे जिज्ञासुओका शकरफाहोगया,–और श्रीपूज्यजी--श्रीधरणेंद्रसूरिजी जोकि–सनातन–जैनश्वेतांबरआम्नायमें चारस्तुतिपर पावंदथे प्रतिक्रमणमे तीनथुइकरना क्या !–नही जानतेथे ? तीनथुइकी प्ररुपणाकरजाते ! मगर कैसेकरे, ? वे–जैनआगमके माहितगारथे, धर्मोपदेशदेनेके लिये नावमें बेठकरजाना शास्त्रोमें क्यौं फरमाया, ? तीर्थकरगणधर-जैनमुनियोंकों-एकहीजगह बेठेरहना फरमाजाते, मगरकैसे फरमावे ! धर्मोपदेशदेना बडे फायदेका कामहै, जो-बात-शास्त्रोमें सबुत पाइजातीहो–उसकों–अमलमें लाना कोइहर्जकी बात नही,

श्रामण्यरहस्य पृष्ट (९) पर बयानहै जिनश्रावकोने उन आत्मारामजीकों आचार्य मानेहै और उनकेही शिष्य आत्मारामजीकी नींदा लिखतेहै-उनकों-सर्वप्रश्न पुछतेहै. और महाप्रतिष्टासे बतलातेहै वह सर्व अनाचारमें पूरेपूरे पंडितहै,—

(जवाब.) अनाचारमें पुरेपुरे पंडित-वे-है-जो-खिलाफहुकम तीर्थकरगणधरके नयामजहब इजाद करतेहै, सवाल पुछनेवालेजिसको ज्ञानवान् समझतेहोगे उनहीकों सवाल पुछतेहोगे. किसीकों कोइसवाल पुछे और उसकेलिये कोइ एतराजहो-यहभी-एकजमानेकी खूबीसमझो, अगर किसीका ख्यालहो विद्यासागर रैलमें बैठतेहै फिरभी लोगउनकों क्यौं सवालपुछतेहै, ? तो सौचो ! यहबात अकलके ताल्लुकहै. जिसकों

जोकोइ अकलमंद समझताहै उसीकों सवाल पुछताहै, विद्यासागर किसीकों कहने नहीजाते तुमहमकों सवालपुछो, जिसकों जरुरत पडतीहै पुछता है,

---

(२४) ☞ (दरबयान पांचसवालोंका.)

पर्युषणनिर्णयपत्रिका पृष्ट (२३) पर बयानहै, श्वेतांबरसंघ--साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाकों-यत्किंचित् पृछा,-(यानी) कुछसवाल पुछते है.

१. सवाल पहला,-पंचांगी किसकों कहतेहै ? और प्रकरण उस पंचागीके अंतर्गतहै-या-नही, ?

(जवाब.) सूत्र-भाष्य-टीका-निर्युक्ति-और-चूर्णि-इनकों पंचांगी कहतेहै, और प्रकरणग्रंथ पंचांगीके अंतर्गतहै, ?

२. सवाल दूसरा,-जो प्रकरणादि पंचांगीसे-न-मिलतेहो-तो--मानना-कि-नही, ?

(जवाब.) कौनकौनसे प्रकरण पंचांगीसें नही मिलते ? जाहिरकरो ! जवाब देयगें,

३. सवाल तीसरा,-यदि शास्त्रकारही परस्पर विरोध करते हो-तो-किससे निर्णय करना ?

(जवाब.) अगर समझनेवालोंकी समझकाही फर्क हो-तो-किसका दोष कहना,

४. सवाल चोथा,-श्रावक समुदाय बेठाहो-वहां-स्त्री-भाषण देवे-या-नही ?

(जवाब.) औरतोके सामनेही-औरत भाषण देवे,

५, सवाल पांचमा—अशठाचरणाकों अंगीकार करनाकि-नही ? जैसेकि-रैलविहार-उपानह पहनना-आधाकर्मी-आहार खाना, अतर-तेल-फुलेल लगाना-इत्यादि,

(जवाब.) प्रतिक्रमणमे तीनथुइकरना और चोथीथुइको वीतरागदेवकी वैरिणी कहना-किसजैनशास्त्रमे लिखाहै ? अपनीश्रद्धाके अनुरागी श्रावकोके शाथ रास्तेमें जैनमुनिकों विहारकरना,—श्रावकलोग मकानकिराये लेवे उसमें जैन मुनिको ठहरना, इनबातोंकों कोइ सौचलेवेतो उसकाशक खुद-ब-खुद रफाहोसकेगा, नावमें बेठनेका जैनमुनिकों हुकमहै-या-नही ? इसबातकोंभी कोइ अपने खयालशरीफमें लावे, उपानह पहननेका पाठ प्रवचनसारोद्धारका इस किताबमें अवलदेचुकेहै, पढाहोगा. आधाकर्मी-आहारखाना-जैनमुनियोंकेलिये मनाहै, तेलकेबारेमें अगरकिसी मुनिकों बीमारीका सबबहो तो-शरीरपर लगाना फर्ज है, शतपाक-सहस्रपाक-और-लक्षपाक वगेरा तेल पेस्तरहोतेथे आजकल-चंदन—बादाम-आवला-सीरकी-खोपरेल वगेराके तेल बीमारीकी हालतमें कइ जैनमुनि शरीरपर लगातेभी है, पांचसवालोके जवाब खतम हुवे, औरभी जिसकों जोकछ पुछनाहो पुछे, हमारे यहां इन्साफके लेख हरवख्त तयार मिलेगे, ऐसा कोइ—न—समझेकि—विद्यासागर चुपरहे. इन्साफ-वहचीजहै-जिसके सामने बडेबडे आलिम और-फाजिल चकराये जाते है.

(२५) ☞ (जवाब तीनस्तुतिप्राचीनता किताबका,)

किताव-तीनस्तुति प्राचीनता नामसे जो जावरेवालोंकी तर्फसे छपकर जाहिरहुइहै, जिसके पंने कुल (१४) है उसके अवलपृष्टपर तेहरीरहै,—आशारहित धर्मानुष्टान स्वीकारकरना, मोक्षसेलेकर सर्वत्र वस्तुओमें मुनिलोगोको निस्पृहता रखना इसीका नाम उत्तममुनिहै,

(जवाब.) लेखक जिसकों गुरुमानतेहै-वे-उत्तम मुनिकी पंक्तिमें है-या-मध्यममें ? अगर कहाजाय उत्तममुनिकी पंक्तिमें है-तो-बतलाना चाहिये शुभहशामके प्रतिक्रमणमें–देवाणंआसायणाए–देवीणं आसायणाए–ऐसापाठ क्यौं हरहमेश बोलतेहै. ? देखो !

(आवश्यक सूत्रका मूल पाठ यहां देतेहै.)

" देवाणं आसायणाए–देवीणं आसायणाए– " आव- आवश्यकसूत्रकीटीकाकापाठ–आशातनया अवहीलनया –यःकर्मबंधरुपो–अतिचारः कृतः–तस्मात्–प्रतिक्रमामि–निवर्ते–इत्यर्थः—

खास आवश्यकसूत्रका मूल–और उसकी टीकाका पाठ फरमाताहैकि–मुनिप्रतिक्रमणमें ऐसापाठबोले मैनेदेवताकी और देवीकी आशातनाकिइहो–तो–उससेमैं-प्रतिक्रमताहुं–अर्थात् निवर्तनहोताहुं. (यानी) पीछा हठताहुं, कहिये ! इसपाठका मतलब क्या हुवा ? और इसपाठकों सचमानना–या–जूठ ? अब कहनेवालोंकी निस्पृहता कहां रही ?–अगर आशारहित धर्मानुष्टान करना और मोक्षसेलेकर सर्वत्र वस्तुओमें निस्पृहतारखना मंजुरहै-तो-यहपाठ प्रतिक्रमणमें क्यौं बोलते हो ? मुहसें कहनाही जानतेहो–या–कुछ सबुतभीरखतेहो ?–जैसे चोथीथुइको वीतरागदेवकी वैरिणी कहतेहो—इसपाठकोंभी वीतरागदेववैरी कहदो, तमाममुनिलोग इसपाठकों प्रतिक्रमणमें बोलतेहै, किसकी

ताकातहै इसपाठकों गलत कहसके, ? चाहे कोइ हजारचतराइकरे मगर शास्त्रकेसामने किसीकीचतराइ नही चलशकती. मुंहसेकहतेहो-मुनिलोगोंकों निस्पृहता रखना चाहिये-मगरदेखो! आवश्यकसूत्रके मूलपाठमें तीर्थंकर गणधर क्या! फरमागयेहै? उसपर खयालकरो, देवीदेवताकी चोथीथुइकेलिये तो इतनी बातेंबनातेहो फिर इसपाठकों प्रतिक्रमणमें हरहमेश क्यों बोलतेहो?

तीनस्तुतिप्राचीनताकिताब सफह अवलपरलिखाहै आजकलश्रावकोंमे ऐसाभ्रम हुवाहै, तीनस्तुतिकामत तीसवर्षसे प्रचलितहुवा, और राजेंद्रसूरिजीनेनिकालाहै, क्यों! नहो!! क्योंकि-आजकल पीतांबरोंका अधिकप्रचारहोनेसे होनाहीचाहिये,

(जवाब.) पीतांबरोंका अधिकप्रचारहीतो लेखककों नागवार गुजरताहोगा, लेखकबहुतही जोरलगातेहै मगर पीतांबर संवेगीसाधुलोग उनका जोर चलनेनहींदेते, जहांजहां संवेगीसाधुमहाराजोंका विचरनाहोताहै वहांवहां तीनथुइका फैलाव होसकतानही, बल्कि! कमीहोता है. देखलो महाराजश्री झवेरसागरजीने मुल्कमालवेमें तीनथुइकेप्रचारकोंरोका, और ब-मुकाम-रतलाममें मध्यस्थोंकीसभाकरके तीनथुइका परामर्शकिया, महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीने-मुल्क गुजराततर्फ-चतुर्थस्तुति निर्णयकिताबबनाकर तीनथुइके प्रचारकोंरोका, और विद्यासागर ब-जरीये अपनीकलमकेरोकरहेहै. जिसकीताकातहोसामने आवे और प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरना किसीसूत्रकी पंचांगीमें दिखलावे, पीतांबरोंकानाम लेखककों अछा-न-लगताहोगा,! मगर खयालकरे! पीतांवरोनेक्याक्याकरदिखलायाहैसुरतमेभी जोचारस्तुतिवालोकीतरक्कीरही बदौलतपीतांबरोंहीकीरही, फिरलेखक ऐसाक्यों-न-लिखे? लिखेहीलिखेमगर यादरहे पीतांवरनामखिलाफकानुनजैनशास्त्रकेनही, जैनसाधुकों नयाकपडामिलेतों-कथा-चुनावगेराके रंगसेरंगलेवे, यहबात निशीथसूत्रके

फरमानसेंसहीहै, किसकीताकातहै निशीथसूत्रकोंजूठा कहसके ? मुल्क-मालवेमें-उज्जेन-इंदोर-रतलाम-मंदसौर वगेराजो बडेशहेरहैवहां तीनथुइ-काप्रचार बदौलत–पीतांबरोंहीकीरुका, रतलाममें (७००) घर सनातन-जैनश्वेतांबर-चारस्तुति माननेवालोके मौजूरहे वहां करीब (५०) घर तीनथुइवालोकेहोगें, इंदोर-उज्जेनमें-बिल्कुलतीनथुइका प्रचार नहीरहा, मंदसोर-सो-उसमें चारस्तुतिमाननेवालोके घर करीब (१००) है, वहां तीनथुइवालोके घर करीब पचीसतीसहोगें, खयालकरो ! पीतांबरोका कैसा प्रभावहै, ? इसीसेकहाजाताहैकि-जगहजगहपर पीतांबरसंवेगीसाधु-महाराजही तीनथुइके प्रचारकों रोकतेहै,-और-प्रतिपक्षीयोंकों उनका-नाम नागवारगुजरताहै, और यहबात बहुतसचहैकि–प्रतिक्रमणमें तीन-थुइकरनेका–मजहब (३०) वर्षसेचला,–सत्पक्षग्राहीकेनामसे जो–"म-हाराजश्री राजेंद्रसूरिजीकी त्रणथुइ-अने-चारथुइसंबंधीचर्चा" इस्तिहार –सुरतविक्टोरिया–प्रेस–तारिख २५-७-१९०३ रोज छपाथा, उसमें लिखाहै राजेंद्रसूरिजीनेबधासूत्रनियुक्तिभाष्य-चूर्णिवृत्तिग्रंथोनावचनाधारे चैत्यवंदनमां त्रणजथुइ करवानो पुनरोद्धार किधोछे,-देखिये ! चैत्यवं-दनमें तीनथुइ करनेका पुनरोद्धारकरना इसमें कबुलरखाहै-या-नही ? अगरकहोगेरखाहै-तो-फिरबात क्याहुइ,? पुनरोद्धारभी क्यौं कुबुलरख-ना था ?-जवानी जमाखर्चसें कामनहीचलेगा, यादरहे ! किसीजैनसू-त्रमें या-उसकीपंचांगीमें नहीलिखाकि-प्रतिक्रमणमें तीनथुइ करना, अ-गर लिखाहै-तो कोइ पाठ बतलावे,

☞ (शेयर.)

कोरीबातोसें कामनहीचलता-जैसेपानीसेंदीपनहीजलता, कोरीबातोसेंबातनहीरहती-जैसे कागजकीनावनहीवहती,१

त्रीनस्तुतिप्राचीनताकिताबसफह (२) पर-लेखकलिखतेहैकि–

जैनोमें किसीरागीद्वेषीदेवोकीपूजानहीहोती, वीतरागभगवानकीपूजा निष्कामभावसेंहोतीहै, रागीद्वेषीदेवोंकीपूजाकरकेसंसारिक-वस्तुमांगनेमेंलगरहना-जैनशास्त्र मनाकरताहै,

(जवाब.) हमलोग-रागीद्वेषीदेवोंकीपूजाकभी-नहीकरते-और-न-संसारिक-वस्तुमांगनेमें लगेरहतेहै, हमारेजैनमजहबमेंवीतरागभगवान्हीकी-निष्कामभावसेंपूजाहोतीहै,-लेखक अगर जैनमजहबमें पावंदहै-तो-उपर लिखीहुइबातकों कुबुलकरे, और इसबातपरदर्याफत उनकेपक्षानुथायी-मुनिलोग-प्रतिक्रमणमें बेठकर देवाणं आसायणाए देवीणं आसायणाए पाठ हरहमेश बोलतेहै-या-नही ? अगरबोलतेहै-तो-इसकी क्या वजहहै ? और इसबातकीभी तलाशकरेकि-श्रुतदेवीका-और-क्षेत्रदेवीका कायोत्सर्ग करतेहै-या-नही ?-अगर करतेहै-तो-उसका क्यासबबहै ? इसका खुलासा जाहिरकरे, हमलोग घरकेभेदीहै, कोइ हजार चतराइकरे मगर अकलमंदोके सामने एकभी नही चलसकती,

तीनस्तुतिप्राचीनता-किताब-सफह-(२) पर लेखक तेहरीर-करतेहैकि-कितनेकदेव-जैनशास्त्रमें अधिष्टातातरीके मानेजातेहै,-जैनोमें-या-जैनशास्त्रपर खामीआतीहै-तब-वे-अधिष्टायकदेव-रक्षाकरतेहै, इसप्रकारसम्यकदृष्टि-देवोकी-स्तुति-किसीकिसीवख्त-करनीपडतीहै,—

(जवाब.) किसीकिसीवख्तभी सम्यक्दृष्टिदेवोकी स्तुतिकरना क्यौं मंजूररखेतहो, ? तुमतो निस्पृहतारखनेवालेठहरे, फिर सम्यक्दृष्टिदेवोंकि स्तुतिकरके अपनी-निस्पृहता क्यौं खोतेहो ? जब निस्पृहताका झंडा उठायाथा-तो-पुरा उठानाथा, और आमलोगोंका मालूमहोकि-देखिये ! यहां लेखकमहाशयने अधिष्टातादेवोंकों रक्षाकरने-

वालेभी माने, और यहभी—बातमंजुररखीकि—किसीकिसीवख्तसम्यक-दृष्टिदेवोंकीस्तुति करनापडतीहै, हमपुछतेहै तकलीफके वख्तभी क्यौं उनदेवोंकी स्तुतिकरना, पेस्तर इसीतीनस्तुतिप्राचीनता—किताबके सफहदूसरेपर लिखतेहो—इष्टफलकीसिद्धि—शुभकर्माधीनहै, और यहांकहतेहो कभीकभी उनअधिष्टायकदेवोकी स्तुतिकरनाभीपडतीहै, क्या ! खूबलेखकहै—जो—अपनेही-लेखसें-आप लाजवाबहोजाय,—

तीनस्तुतिप्राचीनताकिताब-सफह (२) पर लेखकदलील करतेहै कल्पनिर्युक्तिमेकहाहै इसलोकमें चक्रबर्त्यादिभोग-परलोकमें इंद्र-सामानिकादिपद-और-तीर्थंकर पदवीकेलियेभी आशा-न-करनाचाहिये,—

(जवाब.) कौन कहताहैकरो ! औरफिरकभीकभीसम्यकूदृष्टिदेवोंस्तुतिकरनाभी क्यौं मंजुररखतेहो ? निस्पृहबननाथा-तो-पुरेहीबनते ! एकजगहकुबुलकरना-औरएकजगह-न-करना किसघरका न्याय है ? मालूमहोगइ आपलोगोंकी निस्पृहता ? और यहभीबतलाना चाहिये दीक्षादेतेवख्तजोविधि—कराइजातीहै-उसमेंशासनदेवता और वैयावृत्यकरादिकोंकाकायोत्सर्ग क्यौंकरतेहो ? इसकोंभीछोडदो, क्योंकिआपलोगतो निस्पृहताका झंडा उठाये हुवेहो उसमें खललआयगा,

तीनस्तुति प्राचीनताकिताबसफह (१३) पर मजमूनहैकि-यदिभगवान्को देवदेवीयोंकीप्रार्थनाअभिष्टहोतीतो बडेबडेसूर्य-चंद्र-इंद्र-इशानादिदेवोंका वागनुष्टानबताकर लौकिकवस्तुओंकीकी दर्शाते,

(जवाब). अगरतीर्थंकरगणधरोंको देवदेवीयोंकीबेंअदबीकराना मंजूरहोतातो स्थानांगसूत्रके पांचवेस्थानपर सम्यकदृष्टिदेवताओंका-अवर्णवाद बोलनेसेदुर्लभबोधीपना हासिलहोना क्यौंफरमागये? क्या ? इसपाठकों कोइ-जूठ-कहसकताहै, ? अगर लेखककी ताकातहो-तो-क-

हदेवे यह पाठभी जूठहै, खयालकरो? यह वागू-अनुष्टानहुवा-या-नही.? और लौकिकवस्तुओकी सिद्धिकौनचाहताहै ? इसका खुलासा जाहेर करे,

तीनस्तुतिप्राचीनताकिताबसफह (४) पर बयानहैकि—असहिज्ज-देवासुर-नाग-सुवन्नजख्खरख्खस—किन्नरकिंपुरिसगरुलगंधवमहोरगाइ देवगण-इत्यादि, अर्थात्-देवअसुरादिकोकीसहायता-न लेनेवाले श्रावककहलातेहै, और आजकल अतिनिकृष्टदेवोकीउपासनामें अतिदुर्लभ श्रावककुलबरबादकरतेहै,

(जवाब.) अगर देवताओकीसहायलेनामंजुरनहीथातो-पेस्तर क्यौं कुबुलकरचुकेकि-सम्यक्दृष्टिदेवोंकी स्तुतिकभी कभीकरनापडतीहै,? सहायताहीनहीलेना तो फिरस्तुति क्यौं करना ? सहायता-न-लेनेवालेश्रावककहलातेहै इसबातपर पावंदहो-तो-फिर आपकौनहुवे? इसपरखयालकिजिये ! गोष्टामाहिल-निन्हवके-अधिकारमेंदेखो ' आवश्यक-वृत्तिका-पाठहैकि-जब-गोष्टामाहिलनेअसत्यप्र[illegible] ! सूत्र-चतुर्विधसंघनेमिलकरकायोत्सर्गकिया, और देव[illegible]पणाकिइ तब विदहक्षेत्रमेंजाकरभगवान्कोपूछोकि-दुर्बलि[illegible]कोबुलाकरकहा-महा-कुछकहताहै-वहबातसचहै ? या-[illegible]कापुष्पाचार्य वगेरासंघ-जो-वतानेजाकरतीर्थंकरभगवान्[illegible]ष्टामाहिल-कहताहै-वह-सचहै ? दे-गोष्टामाहिलजूठा,—[illegible] छा—और—आकरकहाकि-संघ-सचाहै,

(पाठ—आवश्यक-सूत्रवृत्तिका.)

एतच्चाश्रद्दधाने-तस्मिन्-सर्वसंघेनमिलित्वाकायोत्सर्गेण देवता-आकृष्टा, सा-आगता, उवाच-आदिशतुसंघः-इत्त्काह्संघेन-गत्वातीर्थंकरं पृच्छ ! यद्दुर्बलिकापुष्पाचार्य

प्रमुखसंघो वक्ति-तत्सत्यं-उत-गोष्टामाहिलोक्तमिति-तत्साहाय्यायच--संघःकायोत्सर्गेणस्थितः--सा--तीर्थंकरंपृष्ट्वा-आगताउवाचसंघःसम्यक्वादी-इतरोमिथ्यावादीनिन्हवः-

उसपाठकामाइनाउपर दिखलाचुकेहै, देखिये ! इसमें संघने देवताबोलानेकेलियेकायोत्सर्गकियाहै-या-नही, ? अगर कियाहै-तो -बतलावे दुर्बलिकापुष्पजैनाचार्य वगेरासंघकों-आराधककहना-या--विराधक ? लेखक लिखताहैकि-देवताकीसहायता-न-लेनवाले श्रावक कहलातेथे-तो अब बतलावे चतुर्विधसंघमें श्रावक है--या--नही ?-और उनश्रावकोंकों श्रावकमानतेहो-या-नही ? सबुतहुवा लेखककोरीबातें बनानेवालेहै,-सुभद्रा-सतीने-देवताकीसहाय्यसें चंपानगरीके दरवजे खोलेथे, जिस बातकों आमजैनसंघ-जानताहै,-और-सुभद्रा-सोलह-सतीयोंमें एकसतीथी-यहभी किसीजैनसेंछीपीबातनही, बतलानाचाहिये ! अब लेखक-सुभदासतीकों-श्राविका कहतेहैं-या-नही ?

तीनस्तुति प्राचीनताकिताबसफह (४) पर तेहरीरहैकि-वीतरागभगवानकीवैरिणी-व्यंतरदेवोंकीपूजाका मूल-चोथीथुइहै, क्योंकि पहली-पेंतालीस आगमोकी पंचांगीमें तीनही स्तुति कहीहै,

(जवाब.) किसीजैनआगकी पंचांगीमेंप्रतिक्रमणके वख्त तीनथुइ करना नही कही, और यहभी किसी जैनआगमकी पंचांगीमें-नहीलिखाकि-चोथीथुइ-वीतरागदेवकी वैरिणीहै, अगरकोइ तीनथुइमाननेवालोमें जैनआगमकी पंचांगीका इल्मरखताहो-सामने-आवे, और बतलावेकि-किसपंचांगीमें चोथीथुइ वीतरागदेवकी वैरिणी लिखिहै ? और किस पंचांगीमें लिखाहैकि-प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरना,-अगर इसबात-

कों कोइ-न-बतला सके-तो-सबुतहोगाकि-नाहक ! हठवाद करतेहै-और पाठ बतला सकते नही,

किताब-तीनस्तुति प्राचीनता-संफह (४) पर दलीलहै पीछेसे कोइ कोइ आचार्योंके विचारमें आयाकि व्यंतरदेव इससमय आराधनेमेंआवेगे तो शासनकी रक्षाहोगी. और बौद्धादिक अन्यदर्शनीहै वे इसप्रकार चमत्कार देखातेहै-तो-अपने अनुयायीजो श्रावकहै उनके लिये जोकुछ उपाय-न-विचाराजायगा तो कितनेक दिनोमें सम्यक्तकों खो बैठेगे, एसा बिचारकरके हरिभद्रसूरिजीने ललितविस्तराग्रंथमें व्यंतरदेवोकी स्तुति लिखी.

(जवाब.) आचार्य हरिभद्रसूरिजीने चोथीथुइ नही बनाइ, बल्कि, पहिलेसे है, अगर प्रतिक्रमणमें **वैआवच्चगराणंसंतिगराणं सम्मदिठिसमाहिगराणं**, पाठको-मंजुररखतेहो-तो-चोथीथुइ सबुत हुइ, अगर मंजुर नहीरखतेहो-तो-कहदो यहपाठभी हमनहीमानते, जैसे चोथीथुइ इनकारहुइ वैयावच्चगराणं-पाठकोंभी इनकारकरदो, खयाल करो ! अगर जैनशास्त्रोमें चोथीथुइ मंजुर-न-होतीतो-वैयावृत्यकरनेवालों काकार्योत्सर्ग करनाकैसे मंजुरहोता, अगरकोइकहे चोथीथुइ पीछेसे बनाइहै-तो-बतलावे ! तीर्थकरगणधरोकी बनाइहुइ तीनथुइकी त्रिपुटी कौनकौनसीहै ? जैसे चारथुइकी चोकडी मौजूदहै-वैसे तीनथुइको त्रिपुटीभी होनाचाहिये, मगरकैसेहो ? जोबातनयीहो उसका सबुतकहांसे आवे ? और वगेरसबुतके कोइबात असरनही दिखलासकती, हरशख्शकों लाजिमहै अपनी तेहरीरका सबुतबयानकरे, आचार्यहरिभद्रसूरिजीने कोइनयीबात बयाननही फरमाइ, जोकदीमसे चलीआतीथी उसीको फरमाइहै, हरखासो आमकों वाजहहो किसीजैनशास्त्रमें नही लिखा चोथीथुइ वीतरागदेवकी वैरिणीहै, विनासबुत कोइबात बयान

करना–अकलमंदीका कामनही, " सवत्थचेइए थुइतिन्नि–तिन्नि–वा–कट्टइ "–यहपाठ मंदिरके बारेमें है, चैत्यपरिपाटी करनेकों जाना–उस वख्त अगर मंदिरबहुतहो–और–वख्तथोडाहो–तो एकस्तुतिभी पढना कहा, फिरएकथुइकी प्ररुपणाभी करनाचाहिये, इसवख्तजोचर्चा चल रहीहै प्रतिक्रमणकेबारेमें चलरहीहै, प्रतिक्रमणकीजगह मंदिरकाहवाला देना कौन इन्साफकी बातहै, ? दूसरी जगहका सबुत दुसरीजगहदेना और अपनीबातकों सचकरनेकी कोशिशकरना शिवायपक्षपातके दुसरानही कहशकते. अकलमंदलोग ऐसी पेंचदार बातकों हर्गिज ! मंजूर नहीकरेंगे, हमलोगोकों आपका सबखुलासा हालमालूमहै, जैनतत्वादर्शमें–और–श्राद्धविधिमेंभी मंदिरकी बातहै, प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरनेका वहांकोइ पाठनही, प्रतिपक्षीके दियेहुवे सबुतगेरमुमकीनहै, एक जगहतो आचार्य हरिभद्रसूरिकों चोथीथुइ–नयीबयान करनेवाले बतलातेहो–तो–फिर उनकेबनायेहुवे दूसरेशास्त्रोंकों क्यौं मंजुररखतेहो ? बडे अफशोषकी बातहै अपनी दलील–सचकरनेके लिये आदमी क्या क्या ! बातें जाहिरकरताहै–जोकि–अकलमंदोके खयालमें दुरुस्त नही आसकती,—

किताब–तीनस्तुतिप्राचीनता–पृष्ट (९) पर मजमन है, इस प्रकार कइ आचार्योंके प्रयत्नसें देशमात्रमें चारस्तुति प्रसरी, जवकोइ नयामजहबनिकलेतो–खूबफैलताहै, और जुनेमजहबकी कदरनहीरहती.

(जवाब) कौनकहताहै आचार्योके प्रयत्नसे चोथीथुइ चली है, ? चारथुइ तीर्थंकरोके वख्तसे चलीआतीहै, अगर कदीमसें–न–होतीतो–वैयावच्चगराणंका पाठ क्यौंहोता ? पक्षपातके चश्मेकों उतारकर कोइदेखे, सबुतहुवा चोथीथुइ कदीमसें है, एकशख्शके प्रयत्नसे तीनथुइकी प्ररुपणा शुरुहुइ, मगर वहज्यादे चलसकी नही, सुरत विकटोरिया प्रेसमें सत्यग्राहीके नामसेछपेहुवे इस्तिहारमें कुबुलरखा

है कि-" राजेंद्रसूरिजीने चैत्यवंदनमां त्रणथुइ करवानो पुनरोद्धारकिधोछे, " सोचो ! फिर बातक्याहुई, ? युंतो कैसे कोई कबुल करे कि-उनोने नयामत जारी कियाहै, चारस्तुतिका मानना कदीमसें है,-और उसीसबबसे वह तमाममुल्कामे जारीहै और उसकी कदरभीहै. हाथ-कंकनकों आरसी क्या, ?

किताब-तीनस्तुति प्राचीनता-पृष्ट (६) बयानहै शास्त्रोमें जगहजगहपर तीनस्तुति लिखी जिसकों पीतांबरी संवेगीलोग नवीन कहतेहै,

(जवाब.) जगहजगहपरतो क्या ! एकजगहपरभी प्रतिक्रमणमें तीनस्तुतिकरना नही लिखा, अगर लिखाहै-तो-कोई-शास्त्रसबुतसें पेंश आवे, पीतांबरी संवेगीलोग ठीलकहतेहै,-यादरहे ! दुसरीजगहकासबुत दूसरीजगह कारआमद नहीहोसकता, पीत-अंबर-यानी-पीलेकपडेरखनाखिलाफकानुनशास्त्रके नही, निशीथसूत्रका हवाला अवलदेचुकेहै कि-नयेवस्त्रकों जैनमुनि-कथे-चुने वगेराका रंगदेवे, जैसे श्वेतवस्त्र शास्त्रमें कहेहै वैसेरंगनाभीकहाहै,

तीनस्तुतिप्राचीनताकिताब-सफह (७) पर तेहरीरहै-भद्रबाहुस्वामी आवस्यकनिर्युक्तिमेंलिखतेहे, आयंमि चेइहरं-गंतूणचेइयाइं वंदिज्जा, अजियथयं तिन्निथुइ-परिहायंतिव्वकहंति, मृतकसाधुको परठकरलोटतेवख्त चैत्यमेंजाय, औरवहां चैत्यवंदनकरके अजितशांति-स्तव-कहे, औरफिर वर्द्धमानतीनस्तुति-हीयमानकहे,-

(जवाब.) यह सबुत प्रतिक्रमणका नहीहै, चर्चा चलरहीहै प्रतिक्रमणकी-और-सबुतदेतेहो-मृतकसाधुको परठकर चैत्यवंदनकरते वख्तका-यहकौन इन्साफकी वातहै ? प्रतिक्रमणकी जगह मंदिरकाहवालादेकर कहतेहोकि-सबजगह तीनथुइलिखिहै, क्या ! खूबबातहै?-

मृतकसाधुकों पहुचाकरमंदिरगये-वहां-अजितशांतिस्तव-कहकर वर्द्धमानतीनथुइ हीयमानकही, और कहदिया-तीनथुइ-सबुतहुइ, मगर-यादरहे ! इसपाठमें प्रतिक्रमणका नामनिशानभी-नहीहै, कोइमहाशय यह-न-समझे आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामीने आवस्यकनिर्युक्तिमें प्रतिक्रमणकेलिये तीनथुइ कहीहै,-

तीनस्तुतिपाचीनताकिताव पृष्ट (७) पर दलीलहैकि-कल्पबृहद्भाष्यमेंभी तीनस्तुतिकरनी कही. (पाठ) **चेइघरुवस्सए-वा-आयम्मुस्सगा गुरुसमीवंमि, अविहिं विगिंचणयाए-संतिनिमित्तं च थवो तथ्थ, १, परिहायमाणियाउ-तिन्निथुइओ हवंति नियमेणं-अजियसंतिथ्थग-माइयाउ कमसो तहिंनेउ, २,**

(माइना) मंदिरमें-या-उपाश्रयमें आकर गुरुकेसामने अविधि पारिठावनीका कायोत्सर्गकरना और शांतिनिमित्त स्तोत्रपढना. बाद उसके हीयमानतीनस्तुतिपढना, और फिर अजितशांतिस्तव पढना.

(जवाब.) देखिये ! इसमेंभी वहीबातहैकि-मंदिरऔर उपाश्रयमें आकर अविधिपारिष्टापनिकाकेलिये कार्योत्सर्गकरे शांतिनिमित्त स्तोत्र पढे और हीयमानतीनस्तुति कहे, प्रतिक्रमणकाइसमें कोइजिक्र नही. नाहक ! मंदिरका हवाला प्रतिक्रमणकी बातमें देतेहै और कहतेहै देखो ! तीनथुइ लिखीहै, मगर तारीफ जब है अगर प्रतिक्रमणमें तीनथुइ करनेकापाठ किसीसूत्र-या-पंचांगीका दिखलादो. जिससे मतलबहासिलहो, इनबातोंसें इल्मीयत जाहिर नहीहोती, लेखक अगर अपनी बातकों सचसमझताहो-तो-प्रतिक्रमणकेबारेमें कोइसबुतलावे, मंदिरमेंतो एकस्तुतिपढनेकाभी पाठहै फिर एकस्तुतिकी प्ररुपणाभी शुरु करो,—

(२६) ☞ (आचार्य-भद्रबाहुस्वामीने-आवश्यक निर्युक्तिमेंप्रतिक्रमणकेवख्ततीनथुई करना नही कहा,—)

तीनस्तुति प्राचीनताकिताब-सफह (८) पर दलीलहै वीर-संवत् (१५४) में-महाराज भद्रबाहुस्वामीने निर्युक्तिबनाइ जिसकों आज (२२७७) वर्षसे अधिक होनेको आयेतो कहिये ! (३०) वर्षसे तीनथुइ निकसी-यह-कहना उत्सूत्रहै-या-नही, ?

(जवाब.) कौनकहताहै आवश्यकनिर्युक्तिमें प्रतिक्रमणके वख्त तीनथुइकही, अगर कहीहो-तो-कोइबतालावे,-वहां-मृतकसाधुके-कलेवरकों परठकर आनेके वख्तकी बातहै-और-लेखकअपनीबातकों सचकरनेकी कोशिश करताहै, मगर यादरहे ! अकलमंदलोग इसबातको कभी मंजुर-न-करेगें, प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरना इसनिर्युक्तिमें नही कहा, अगर कहाहै-तो पाठबतलावेलेखककेही दियेहुवे सबुतोसें मालूमहोगयाकि-उनकेपासकोइ पुख्तासबुतनहीहै. हरजगहमंदिरकीबात अगाडी लातहै, यह नही मालमकिं-मंदिरमें तो एकस्तुतिभी करना कहीहै, फिरतीनथुइकाही क्या निश्चयरहा, (३०) वर्षसें प्रतिक्रमणमें तीनथुइकरनेकी प्ररुपणाशुरुहुइ-यहबातबहुतसचहै, इसमें कोइगलतबात नही, लेखकलिखतेहै निर्युक्तिकों बने आज (२२७७) वर्षहुवे-हमकहतेहै इससे तुमारीबात क्या सबुतहुइ ? अगर उसमेंप्रातिक्रमणकेवख्त तीनथुइ करनेका पाठ बतलाते-तो-तुमारीबहादूरीथी, मगर बतलाते कहांसे ? उसमेतो प्रतिक्रमणकानामनिशानभीनही, अमर कोइ लाखचतराइ खैले, मगर अकलमंदोंके सामने एकभी-नही चलसकती, और हमतो घरके भेदी ठहरे,-हमारे सामने क्या ! कोइ कहेगा,-किसीकम-अकलकों-यहबात-समझाना, हम-सब समझेहुवेबैठेहै,—

तीनस्तुति प्राचीनताकिताब-सफह (८) पर मजमूनहैकि-महाराज-राजेंद्रसूरजीने तीनथइ तीसवर्षसेनिकालीयहकहना मूर्खोंका कामहै,

(जवाब.) आवश्यकानिर्युक्तिमे प्रतिक्रमणकेवख्त-तीनथुइकही-है ऐसा कहना अज्ञानीयोंकाकामहै, भद्रबाहुस्वामीने उक्तनियुक्तिमें एसा नही कहा, चोथीथुइकों वीतरागदेवकीवैरिणीकहना-बडेकमअकलोंका-कामहै, क्योंकिकिसीसूत्रकीपंचागीमेंऐसानहीकहा, अगरकहाहै-तो-कोइ पाठबतलावे, चोथीथुइ आचार्यश्रीहरिभद्रसूरिजीनेचलाइ, यहकहनाभीअल्पज्ञोकाकामहै, अगर कोइ तीनथुइकोमंजुररखनेवाला इसबातका सबुतरखताहो. पेशआवे, कोरीबातोंसे काम-नहीं चलेगा, इनहीसबुतोंसें कहनेवालेकहतेहैकि-प्रतिक्रमणमें-तीनथुइकरना किसीशास्त्रमेंनहीलिखा, और तीसवर्षसे चलाहै,-खयाल करो ! राजेंद्रसूरिजीजब-श्रीपूज्य-श्रीधरणेंद्रसूरिजीकेशाथ विचरतेथे-प्रतिक्रमणमें कितनी थुइकरतेथे ? लेखक इसबातकों जाहेरकरे, और एकजैनधुके नामसें-सुरत-खुदाबक्षप्रेस-नाणावठके पतेसेजो "जाहिरखबर" छपीथी, उसकोंदेखे, उसमें जहां-चुनीलालजी छगनलालजीने राजेंद्रसूरिकों पुछाहैकि-आपका गछ क्या है ? तब सूरिजीनेकहाहै-"हवणां सुधर्म गछछे"-यानी इसवख्त हमारा सुधर्मगछहै, इससे सबुतहुवा पेस्तरकोइ औरगछहोगा,-

तीनस्तुतिप्रीचानता किताब-सफह (९) पर बयानहैकि-तीनस्तुति-जबतककही जाय तबतकमंदिरमें ठहरनाचाहिये, कारणपरत्व विशेषभी ठहरना,

(जवाब.) खूबकहा ! घूमघामकर उसीठिकाने आये, जोकि-

हमाराकहना था, हमभी–तो–यहीकहतेथे, मंदिरकीबातहै, प्रतिक्रमणकीनही, कहिये? इसमे आपने नयी इल्मीयत क्या ! दिखलाइ ? जिससे हमारा इतमीनानहो, क्या ! इसीभरुसेकहतेथे पंचांगीमें सबजगह तीनथुइलिखीहै, हम समझतेथे कोइ बडासबुतरखतेहोंगे. मगर मालूम होगये आपलोगोके सबुत ! हरजगह मंदिरकाही जिक्रलातेहो, और प्रतिक्रमणकेबारेमें कोइसबुत नहो देसकते, यादरहे ! विद्यासागरकी दलीलकों–तोडना–मोतीचूरका लडडु–नहीहै–बल्के ! लोहकेचनेहै, आपलोगोकेदिये हुवे पंचांगीके सबुत देखलिये, तीनथुइका शौर उडारखाहै. मगरप्रतिक्रमणमें तीनथुइकरनेका एकभी सबुतनही देसकते,–

---

(२७) ☞ (जवाब–राजेंद्रसूर्योदय–किताबके लेखका,)

राजेंद्रसूर्योदयकिताब–पृष्ट (३२) ते हरीरहै, साधु–चोथेगुणस्थानवालेदेवोंकी स्तुति कैसेकरसके ?

(जवाब.) क्यौं–न–करसके ? उनकीधर्मश्रद्धापर तारीफकरना कौनदोषकीबातहै ?–अगर इसबातकों नामंजूरखतेहो–तो–फिर हरहमेश प्रतिक्रमणगें बेठकर देवाणं आसायणाए–देवीणं आसायणाए पाठ क्यौं पढतेहो? इसपाठकोंभी पढना छोडदो, और स्थानांगसूत्रमेंजो बयानहैकि–सम्यक्दृष्टिदेवताओंका अवर्णवादबोलनेसे दुर्लभबोधीपनाँ हासिलहोताहै इस बातकोभी नामंजुरकरो, और खयालकरो ! देवता अगर धर्मश्रद्धामें लाइकतारीफकेनहीहै–तो–उनकों शासनके रक्षपाल कैसे मुकररकिये गये, ?

☞ (सूत्र-महानिशीथका पाठहै,)

जलजलणदुठसावय नरिदाहिं जोगणीण भए,
तह भुय जख्ख रख्खस-खुद्द पिसायाणं मारीणं,
कलिकलहविग्घरोहग-कंताराइ समुद्दमझेय,
दुचिंत्तिय अवसउणे-संभरियव्वा इमाविज्जा,

(माइना) पानी-आग-दुष्टजानवर-राजा-सर्प-योगिनी-भत-यक्ष-राक्षस-क्षुद्रपिशाच-महामारी-कलिकलह-विघ्न-रोग-महाअटवी-समुद्र-और अपशकुन-वगेरा चिंताफिक्रकेवख्त संयम और आत्मरक्षाकेलिये साधुलोग इसमहाविद्याको यादकरे, देखिये ! महानिशीथसत्रका पाठ क्याफरमाताहै, इसपाठकों तीनथुइ माननेवाले मंजुररखतेहै-यानही ? इसबातकी जाहिरकरे,

---

☞ (फिर आगे इसीमहानिशीथसूत्रमें मजमूनहैकि-,)

बर वख्त-सोनेके-साधुलोग अपनी आत्मरक्षाकेवास्ते हमेशां इसमहाविद्याका पाठकरे, और बाद उसके सोवे, अगर-न-पढेतो उसकों उपस्थापनाका प्रायछित लगे, जिसका खुलासापाठ यहां तेहरीरहै, देखो !

☞ (पाठ-महानिशीथसूत्रका,—)

तउ-एआए-पवरविज्जाए-अत्ताणगं समहिमंतिउण-इमेसत्ताख्खरेउत्तमंगोभयखंधकुच्छीचलणतलेसु-णिसेजा,

कुसुमिणदुनिमित्ते–गहपीडुवसगामारिरिठभये,
वासासणिविज्जुए–वायारि महाजणविरोहे,
जंचथ्थिभयंलोगे–तं सव्वं निद्दले इमाए विज्जाए,
सठ एहे मंगलयरे–पावहरे सयलपावखय सोखदाइ,

अक्काउंमिमे पच्छित्ते–संथारगंमिउण इम्मणस्सणं, धम्म सरीरस्स–गुरुपारंपरिएणं–समुवलद्धेहिं, तु–इमेहिंपरममं तख्खरेहिं–दससुविदिसासु–अहिहरिद्दुट्ठपंतवाणतंतर पिसायादीणं–रख्खणं करेज्जा–उवठाणं,—

देखिये ! इस पाठमें खुलासा जाहिरहैकि-साधुलोगभी हमेशां बर-बख्तसोनेकेइसमहाविद्याकापाठकरे, अगरचे ! न-करे-तो-उसको प्रायछित्तहै, हरवख्त तीनथुइमाननेवाले कहतेहै हमपंचांगोपरपावंदहै, अब बतलाइये ! यह पाठ पंचांगीकाहै-या-पंचांगीकेबहारका ? अगर पंचांगीकाहै-तो-फिर मंजुरकरो, और कुबुलकरोकि-देवताकी मदद लेना तीर्थंकरोने फरमायाहै,

फिर इसीमहानिशीथसूत्रका पाठहैकि-साधु-श्रुतदेवताकीविद्या-का-लाख दफे जाय करे,

☞ (पाठ–महानिशीथसूत्रका ,)

वंदितु चेइए सम्मं–छठं भत्तेण परिजवेइमं,
सुयदेवयं विज्जं–लख्खहा चेइयालए.
उवसंतो समभावेणं–एकचित्तो सुनिच्छिओ,
आउत्तो अव्ववंख्खितो–रागरइअरइवज्जिओ,

(माइना.) बेलेकातपरकेमुनि–जिनमंदिरमें–जाय, और नम-

स्कारकरकेश्रुतदेवीकी विद्याका लाखदफे जापकरे, समभावमें उपशांत रहे, और अपने चित्तको एकध्यानपर रखे, रागद्वेषसे रहितहोकर उपयोगकेसाथ उक्तविद्याका जापकरे,—बतलाइये ! इससे क्या सबुतहुवा ? खयाल करो ! अगर जैनआगमको श्रुतदेवताकीविद्याकाजापनामंजुरहोता, तो यहपाठ क्यौं होता ? सबुतहुवा साधुलोगभी श्रुतदेतदेवताकीविद्याका पाठ करे, तीनथुइपरएतकातरखनेवालोकी ताकातहो—तो—कहदेवे इसपाठकोंभी हम नही मानते, और जैसे चोथीथुइके लिये टालटुलकरतेहै इसपाठकेलियेभीकरे, मगरतारीफहै उनकीजो तीर्थंकर गणधरोके फरमानेपर अमलकरे, और बेंहुदा बेंसनदबातें पेंशन—करे,

अब व्यवहारसूत्रकी चूर्णिकापाठदेकर देवताकी सहायतासें आलोचनालेनेका सबुतदेतेहै, सुनो ! व्यवहारसूत्रकी चुर्णिमें लिखाहै-कि—साधुलोगोकों आलोचनाप्रायछित लेनाहो—और—उसवख्तगुरुमहाराजका इत्तफाक—न—हो—तो-तेलेकातपरके देवताका आराधनकरे, और उसकी सहायतासें आलोचना लेवे.

☞ (व्यवहारसूत्रकी चूर्णिका पाठ,—)

इत्थं तित्थंकरेण—गणहरेहिय—बहुणि—पायछित्ताणि—दिज्जमाणाणि देवयाणदिट्ठाणि-तओ देवयाओ अठमभत्तं काउं अकंपिता आलोए,

(माइना.) तीर्थंकर-गणधरोने अपनी मौजुदगीमें जोजो प्रायछित दियेथे देवताओनेदखेथे, इसलियेउनदेवताओंकों आराधनकरके साधुलोग-ब-मुजबफरमाने उनकेप्रायछितलेवे, देखिये ! इसपाठमें देवताकी मददलेनासबुतहै-या-नही ? और बतलाइये ! व्यवहारसूत्रकीचुर्णिकों पंचांगीमें मानतेहो-या-नही ? अगर मानतेहो-तो-उसमें-देवताकी मदद

लेना कुबुलकरो, और जोकहतेथेकि-मुनिकों-किसीकीमदद लेना-नही चाहिये-यहबात-रदहुइ-या-नही,? इसपर गौर करो,

फिरनिशीथसूत्रके सोलहमें उद्देशेका पाठहैकि-जब-मुनि-जंगलमेंरास्ताभूलजाय-तो-वनदेवीका-कार्योत्सर्ग-(यानी)-ध्यानकरे,-

☞ (निशीथसूत्रके सोलहमें उद्देशेका पाठ,)

ताहेदिसिभागमसुणंता-बालबुढढ-गच्छस्स रक्खणट्ठा वणदेवयाणकाउसग्गं-करंति-सा-आकंपिआ-दिसिभागंपंथंकहेज्जा, इत्पादियावत् एथ्थसुद्धोचेव-नथ्थीपायछित्तं.

(**माइना.**) साधुलोग बरवख्तसफरके जंगलमें अगर रास्ता भूलजाय, उसवख्त अपनी और दूसरे बालवृद्ध वगेरा मुनिलोगोकी रक्षाकेलिये वहांहीखडेहोकर वनदेवीका कार्योत्सर्ग-यानी-ध्यानकरे, बदौलत उसध्यानके वनदेवी आनकर रास्ता बतलावे, और मुनिलोग-उसबतलायेहुवे रास्तेपरचलकर जंगलसे पारहो, औरइसकाररवाइका-कोइप्रायछितभी लेनानहीफरमाया, इसइसपाठसे सबुत हुवा-संयम-और-आत्माकी हिफाजतकेलिये मुनिलोगभी देवताकी मदद लेवे,

कहिये ! लेखकमहाशय ! अब आपकेदिलकावहेम-या-शक रफाहुवा-या-नही ? चोथीथुइतो आपलोगोके खयालमें आचार्योंने बनाइतो-क्या ! यहपाठभी आचार्योंने बनाया ?-या-तीर्थंकर गणधरोंकाफरमाया हूवाहै, अगर ताकातहोतो कहदो यहभी काबिलमंजूर करनेकेनही, मगरकिसकी ताकातहै इसकाइनकारकरशके, बेंइल्मके सामने चाहेसो-कहो, मगरतालीमयाफतालोग इसबातकोंहर्गिज ! मं-

जूरनहीकरेगें, मालूमहोगये लेखकके शास्त्रसबुत ! कोरेदमभरनेवालेहैं, कहतेहै देवताकी मदद नही लेना चाहीये, मगरजैनशास्त्र फरमाते है, धर्मकामके मददलेना कोइ मुमानीयतनही, कइसबुतभी उपरदेचुके, यातो लेखक इसकोंकुबुलकरे, या–कहदेवे–हम–इसकों नही मानते,– जैसे चोथीथुइकों वीतरागदेवकी वैरिणी बतलातेहो. इनपाठोकोंभी कहदो–वीतरागदेवके वैरी है,—

---

(२८) ☞ (प्रतिक्रमणमें चारस्तुतिकरनेका–सबुत,) (जिसकों भाष्यकार-अवचूरिकार-और-नवअंगसूत्रकी टीका बनानेवाले अभयदेवसूरिमहाराज–प्रमाणिक–और–आवश्यकके अंतर्गत बतलातेहै,–

चैत्यवंदनभाष्यमें चैत्यवंदनकेलिये (२४) द्वार बयान फरमाये, उसमे पांचमे द्वारपर तीनकिस्मके चैत्यवंदन करना फरमाया, उसका पाठ इसजगह बतलाते है, देखो !

☞ [पाठ चैत्यवंदनभाष्यका,]

(गाथा २३ मी.)

वमुक्कारेण जहन्ना–चिइवंदण मज्झदंडथुइजुअला,
पणदंडथुइचउक्कग–थयपणिहाणियउक्कोसा,

☞ [पाठ अवचूरिका.]

नमस्कारेण–अंजलिबद्धशिरोनमनादि लक्षणप्रणाम मात्रेण–यद्वानमोअरिहंताणंइत्यादिना, अथवा–एकेनश्लोकादिरूपेण नमस्कारेण–इतिजातिनिर्देशात्-बहुभिरपिनम-

स्कारैः-यद्वा-नमस्कारेण प्रणिपातापरनामतया-प्रणिपात-दंडकेन-एकेन, मध्या-मध्यमदंडकश्च-अरिहंतचेइयाणंइ-त्यादिः-एकः--स्तुतिश्चप्रतिता-एका-तदंतएव--या-दीयते तएवयुगलंयस्यांसादंडस्तुतियुगलाचैत्यवंदना, शक्रस्तवो-प्यादौ भण्यते (अथवा) दंडकयोः शक्रस्तवचैत्यवंदनरु-पयोर्युगलं स्तुत्योश्चयत्रसा दंडस्तुतियुगला, इहचैका स्तु-तिचैत्यवंदनादंडक कार्योत्सर्गानंतरं श्लोकादिरुपया अन्या-न्यजिनचैत्यविषयतया-अधुवात्मिका तदनंतरंच अन्या-ध्रुवा, लोगस्सुज्जोयगरेत्यादिनामस्तुतिसमुचाररूपा (यद्वा) दंडकाः शक्रस्तवादयः पंच-स्तुतियुगलंच—समयभाषया स्तुति चतुष्टयं—उच्यते, आद्यात्रिस्रोपिस्तुतयोर्वंदनादि रुपत्वादेकागण्यते, चतुर्थीस्तुतिरनुशास्तिरुपत्वात् द्वितीयोच्यते—तथापंचभिर्दंडकैः स्तुतिचतुष्केणस्तेन प्रणिधा-नेन—च—उत्कृष्टा,

इसपाठका माइनायहहैकि-चैत्यवंदन तीनतरहकीहोतीहै, ज-घन्य-मध्यम-और उत्कृष्ट-जिसमें मध्यमचैत्यवंदन उसकोंकहते है, जो नमुथ्थुणंपढकर यावत् अरिहंतचेइयाणंतक पाठपढे, औरएक नमस्कार मंत्रका कार्योत्सर्ग करके एकस्तुतिकहे, या-मयचैत्यवंदनके नमुथ्थुणं यावत्स्तुतिपर्यंत पढकर लोगस्सउज्जोयगरे कहे, अथवा चारस्तुतिकह-कर देववंदनाकरे, इसकानाम मध्यमचैत्यवंदनाहै, उत्कृष्ट चैत्यवंदन उसको कहतेहै-जो-पांचदंडक-चारस्तुति-स्तवन-जयवियरायवगेरा प्रणि-धानपाठतकपढे, यहां भाष्यकारने मध्यमचैत्यवंदनमें जो स्तुतियुगल कहा उसकामतलब अवचूरिकारने इसतरह खुलासाकियाहैकि अवलकी तीनस्तुति अर्हत्चैत्यकी-दुसरीसवतीर्थकरकी और तीसरी-जो-ज्ञानकी है-वह-सववंदणवत्तीयापाठके शाथकहीजातीहै, इससेसबुतहुवा वंदना-

दिस्वरुप-जो-है, सब-एकभेदमें है, और चोथीथुइ अनुशास्तिरुपहै. इस लिये इसकों दुसरेभेदमें शुमारकिइगइ, इनदोनोंभेदोंकों मिलानेसे स्तुतियुगल-यानी-चारस्तुतिहुइ, इसीसबुतसें स्तुतिचतुष्टयपद दियाहै, देखलो ! इसपाठसे साफतौरपर चारस्तुति सबुतहुइ, किसकी ताकात है इसकों गलत कह शके, ?

(भाष्यकारने चारस्तुति बयानफरमाइ)

[उसकापाठ,]

अहिगयजिण पठमथुइ–बीयासव्वाण तइअनाणस्स,
वेयावच्चगराणउ–उवउगथ्थं चउथ्थथुई, (५२)

(माइना,) चारस्तुतिमें अवलस्तुति–एकतीर्थंकरकी-दुसरी सबतीर्थंकरोंकी–तीसरीज्ञानकी–और-चोथी वैयावृत्यकरनेवाले देवताओंकी, देखिये ! इसमेभी चारस्तुतिका सबुतहै जिसकों कोइअकलमंद गलतनही कहसकता, खयालकरनेकी जगहहैकि–पहेली–दुसरी–तीसरी स्तुतिकहनेसे पेस्तर शक्रस्तव–लोगस्स–और–पुख्खरवर्दी–इनतीनोंकी अखीरमें वंदणवत्तीयापाठ कहकर कायोत्सर्ग करनाकहा. और चतुर्थस्तुतिके वख्त सिद्धाणंबुद्धाणं कहकर वंदणवत्तीयापाठ बोलना नहीकहा. सबबइसका यहहैकि–तीर्थंकरदेवोकों-और-उनके ज्ञानकों वंदनीकपूजनीक समझकर वंदणवत्तीयापाठ कहागया. और चतुर्थस्तुतिमें शासनदेवताको वैयावृत्यकरनेवाले समझकर वैयावच्चगराणंपाठ कहा, वंदणवत्तीयापाठ नहीकहा, देखलो ! तीर्थंकरगणधरोने अवलहीसे फरमादियाहैकि–तीर्थंकर और ज्ञान वंदनीकपूजनीकहै, और शासनदेवता वैयावृत्यकरनेवाले है, यहबात प्रतिपक्षीकों क्यौं-न-पसंद हूइ, ? मगर ठीकहै ! जबतक-आदमी पक्षपातसे अलग नहीहोता असलीबातपर उसका खयाल नही जमता.—

फिरभाष्यकारने–वन्ना सोलसवसियाला–इसपदसें आठ वर्ण प्रमाणद्वार बयानकिये, इसमें चैत्यवंदनसूत्रके सबहर्फ सोलहसो-सेतालीश-बतलाये,–सो यहां मयगाथाके दिखलाते है.

☞ (पाठ चैत्यवंदनभाष्यगाथा (२६) (२७),--)

अडसठि अडवीसा–नवनउयसयंचदुसयसगबउया,
दोगुणतीस दुसठा-दुशोल अडनउअशय दुवन्नशयं, २६,
इअनवकार खमासमण-इरियसक्कथ्थयाइं दंडेसु,
पणिहाणेसु अ अदुरुत्तवन्नासोलसयशीआला, २७,

(माइना) खास अवचूरिकारमहाराज फरमाते है सुनो! नमस्कारमंत्रके (६८) हर्फ, इछामिक्षमाश्रमणके (२८) हर्फ, इर्यावहि-के इछामिपडिकमीउसेलेकर ठामीकाउसग्गतक (१९९) शक्रस्तवके सव्वेतिविहेणवंदामितक (२९७) चैत्यस्तवके अरिहंतचेइयाणंसेलेकर अप्पाणंवोसरामीतक (२२९) चतुर्विंशतिस्तव-यानी-लोगस्सके सव्व-लोएतक (२६०) श्रुतस्तवके सुअस्सभगवओतक (२१६) सिद्धस्तव-के सम्मदीठीसमाहिगराणंतक (१९८)–और प्रणिधानदंडकके (१५२) इनसबहर्फोंकों मिलाने कुलमिलान (१६४७) हर्फ होते है,

देखिये! यहांभी वैयावच्चगराणंकेपाठसे सिद्धस्तवमें (१९८) हर्फोंकी गिनति बतलाइ, अगर चोथीथुइमानना–जैनशास्त्रोकों नामं-जुरहोती-तो वैयावच्चगराणंपाठ क्यौं होता? अगर वैयावच्चगराणंपाठ--न-लेवेतो सोलहसोसेतालीस हर्फोंकी गिनती पुरीनही होसकती, इस लिये सबुतहूवाकि-वैयावच्चगराणंकापाठ बोलना तीर्थंकरदेवोंका हूकम है, वैयावच्चगराणंपाठ सबुतहूवा-तो-चोथीथुइ-खुद-सबुतहूइ, ऐसाकोइ जमामर्द नही जोइसपाठकों जूठा तसव्वरकरसके, और किसकीताका-

तहै कि-इससबुतकोंतोडे, विद्वान् उसीकानामहै जैसासवालहो-उसका वैसा जवाबदेवे, जिससे उसकामतलब हासिलहो. यहनहीकि-चर्चाचलतीहो प्रतिक्रमणकी-और-सबुतदेवे मंदिरका,—

अगरकोइ तीनथुइ माननेवाले कहे हमकों चैत्यवंदनभाष्य मंजुरनही तो उसको खयालकरना चाहिये-नवांगसूत्रकी टीकाबनानेवाले श्रीमान्–अभयदेवसूरिजी–महाराज देखो ! पंचाशकसूत्रकी टीकामें क्या ! फरमा रहे है,—

(पंचाशकवृत्तिका—पाठ,—)

चैत्यवंदनभाष्यकारादिभिरेतत्करणस्य समर्थित्वा तच--तदधिकतरमपि तन्नयुक्तं--नच--वाच्यं भाष्यकारादिवचनानि--अप्रमाणानि तदप्रमाण्येसर्वथा आगमानवबोधप्रसंगात् आवश्यकानुज्ञानेच चैत्यवंदनस्य अनुज्ञात्वात् आवश्यकांतः पातित्वात्—चैत्यवंदनसूत्रस्य—इति—अलंप्रसंगेन,—

(माइना,) अभयदेवसूरिजी महाराज चैत्यवंदनभाष्यकारको प्रमाणिक बतलाते है, अगर इनके वचनोंकों कोइ अप्रमाणिक कहे-तो वह आगमका (यानी) जैनसिद्धांतोका अनजानहै ऐसाजानना. क्यौं कि-आवश्यकके अनुज्ञानमें चैत्यवंदनकों अनुज्ञातजानना. चैत्यवंदनसूत्र आवश्यकके अंतःपाती है,—चैत्यवंदनमें चारस्तुतिकरना मध्यमभेदमें उपर बतलाचुकेहै,—वैयावच्चगराणंका-पाठ-अगरमानतेहोतो चतुर्थस्तुति सबुतहूइ,–जाये गौरहै नवअंगशास्त्रकी टीका बनानेवाले-महाराजश्रीअभयदेवसूरिजी-जिन-भाष्यकारकों प्रमाणिक फरमावे, उनकों कौन अप्रमाणिक कहसकताहै ? तीनथुइपर एतकातरखनेवालोंकों

लाजिमहै, भाष्यकारकों-अवचूरिकारकों-और-नवअंगशास्त्रकी टीकाके बनानेवाले-अभयदेवसूरिजीकों--मान्यकरे, पंचांगीकों मान्य करतेहो तो-पंचांगीकों बनानेवालोंके-फरमानकोंभी मंजूर करो,—

☞ जो शख्श सचीनींदमें सोताहो-उसकों अवाज देकर दुसरा शख्श जगा सकताहै, मगर जो शख्श नकली नीदमें जानबुझकर सो रहे-और-अवाज देनेवालेकी अवाजकों--सुनताहुवाभी--न--सुने, उसको कोइ कैसे जगासकेगा. बस ! इससे ज्यादे कोइ क्या लिखे,--?

---

(२९) ☞ (जवाब-जिज्ञासुजनमनःसमाधि किताबके लेखका.)

जिज्ञासुजनमनसमाधिकिताब-जो-(२२) पंनोंकी छपी है, उसके टाइटल पेजपर लिखाहै-" शांतिविजयजीके साहासिक कर्मोंका प्रतिकार, (यानी) शांतिविजयजीके कार्यपर समालोचना,—

(जवाब.) शांतिविजयजीके साहसिककर्मोंका प्रतिकार तुम क्या करोगे ! तुमारे साहसिककर्मोंका प्रतिकार शांतिविजयजी कररहे है. देखलो ! तुमारे सवालोके जवाब किसकदर उमदगीसें देरहे है जिसकों पढकर तुमभी ताज्जुब करोगे, चारपंनेका लेख लिखकर समझते होगें उनके साहसिककर्मोंका प्रतिकार होगया, मगर यादरखो ! उनके साहसिककर्मोंका प्रतिकार तुमसें--न--होसकेगा. देखो ! इसी जिज्ञासुजनमनःसमाधि किताबके पृष्ट (१३) पर तुम खुद लिखतेहो-" पीलेकपडे पहरना, रैलविहार करना, इत्यादिमें एकांत वादकरनेसे निन्हवहकनेमें कुछ हरकत नही, " सोचो ! इसका मतलब क्याहुवा ?

मतलब यहहुवाकि–पीले कपडे और रैल विहारकरना–अनेकांतवादसें यानी (स्याद्वादन्यायसें) निन्हवपनानही, यहभी खुबकहा, इससेतो तुमखुद कुबुल होगयेकि–अनेकांतवादसें उक्तबातें ठीकहैं, चतराइतो लेख लिखनेमें खूबकरतेहो–मगर–अकलमंदोके सामने चलनहीसकती, औरहमतो घरकेभेदी ठहरे,–हमारेसामन काइक्या चतराइ करेगा ?–

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताबके पृष्ट (१४) पर बयान है अनेक साधुओके बीचमें रैलविहार कररहेहै उनकोंही रौकना मुनिसंवेगीयोंकों कठिनतर है तो–अन्यमतावलंबीयोंकों क्या रौकसकेगें, ? एकही मनुष्य समस्त पीतांबरोका पीतलेशी धुर्रा–उडारहाहै तो क्या ऐसे साधु इतनीभारीसमुदायमें पढेलिखे नही है ? यदि है–तो–प्रकाशमें क्यौं–नही आते ? क्या ! उसपासथ्थेसे डरते है, ? अहो मुनिमहाशयो यदि वीतरागप्रणीतसूत्रोंका बलहै तो क्यौं छुपते फिरते हो ?

(जवाब.) पार्श्वस्थ वहहोता है जो आधाकर्मी–उपाश्रय–वापरे, देखो ! पंचकल्पचूर्णि, पार्श्वस्थ वहहोताहै–जो–आधाकर्मी आहार लेवे, देखो ! पींड निर्युक्ति, पार्श्वस्थ–वहहोताहै–जो चौदहउपकरणसें ज्यादे उपकरण रखे, देखो ! निशीथसूत्रकीचूर्णि, पार्श्वस्थ वहहोताहै जो साधु–साध्वी–एकशाथ विहार करे, देखो ! व्यवहारसूत्रकी चर्णि पार्श्वस्थ वहहोताहै–जो– शय्यातरके घरका आहारलेवे, देखो ! आवश्यकसूत्रकी चूर्णि,–कइमुनि–जब–एकमुल्कसे दुसरे मुल्ककों विहार करते है, श्रावकोके शाथ विहार करते है. क्या श्रावकलोक नही जातेकि–शाथमे दशपनरांह मुनिमहाराजहै आहारका योग रखना होगा. क्या ! जो पूर्णसंयमी होनेका दावा रखते है विनाश्रावकके अकेले विहारनही करसकते ? अगर कहा जाय-जैसा द्रव्यक्षेत्रकालभावहै-वैसाबर्तते है, तोफिर इसी सडकपर आइये ! उत्कृष्टता किसबातकी रही ?

आत्म कल्याणके लिये बाइसपरिसह–जो–जैनशास्त्रोंमें बयान फरमाये है–अपने बदनपर सहनकरना चाहिये, कोरीबातोंसे कामनही चलेगा, परलोकमें अपना धर्मही कामदेगा. जोशरूश अनेक साधुओके बीचमें बेंधडक रैलविहार कररहेहै, तुमारी ताकात नही तुम उनकों रौकश-को, लेखक दुसरोंकों चमकाकर सायत ! आपसमे अनबनाव कराना चाहतेहोगे मगर पीतांबरसंवेगी साधुलोग बडे चतरहोतेहै–वे–आपसमें अनबनाव कभीकरनेवाले नही. और फिर लेखक लिखताहै क्या ! उसपासथ्थेसे डरतेहो ? जवाबमें मालुमहो-वे-उसशुद्धसंयमीसे-नही ड-रते-बल्के ! लेखक खुद डरताहै जभी तो दुसरोंकों लिखताहैकि-यदि वीतरागप्रणीतसूत्रोंका बलहै-तो-प्रकाशमें क्योंनही आते ? मालुमहोता है लेखककों वीतरागप्रणीतसूत्रोंका बलनही है-जभी दुसरोको ऐसा लिखते है.–और यहभी सबुत होताहै न्यायरत्नकी कलम लेखककों उमदा तौरसे चकित कररही है.

फिर लेखक यहभी लिखताहै-एकही-मनुष्य-समस्त पीतांब-रोंका धुर्रा उडा रहाहै, जवाबमें मालुमकरे वह पीतांबरोंका धुर्रा क्यों उडावे ? क्योंकि-वह-खुद पीतांबर है, धुर्रे उनकेलेखोंके उडरहेहै जो बेंहुदा-बेंसनदबातें पेंशकरतेहै-और जैनमें-नयेनयेमजहब इख्तियार क-रतेहै, और फिर जोलिखाहैकि–इतनीभारीसमुदायमें क्या ! ऐसे पढे लिखे साधु-नही है-जो प्रकाशमें आवे, जवाबमें मालुमहो क्योंनहीहै ? बहुतहै, देखिये ! पढेलिखे हुवे-महाराजश्री झवेरसागरजी कैसे गीतार्थ हुवे, जिनोने ब-मुकाम-रतलाम मुल्क मालवेमें मध्यस्थोंकी सभाकरके तीनथुइका परामर्शकिया, और तीनथुइके फैलावको-रोका, महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीने चतुर्थस्तुतिनिर्णय-किताब बनाकर ती-नथुइके फैलावको रोका सुरतमें--पंन्यासजी--श्रीयुत--चतुरविजयजीने-और--सनातन-जैनश्वेतांबर आम्नाय-चारस्तुतिमाननेवाले श्रावकोंने-

-अगत्यका ठहराव करके तीनथुइके फैलावकों रोका, और विद्यासागर वजरीये अपनी कलमके शास्त्रसबुतदेकर तमाम मुल्कोंमें रोकरहे है, इससें ज्यादे और क्या चाहतेहो, ?-देखिये ! पीतांबरोने क्या क्या ! करादिखायाहै ? पीतांबरनाम कुछबुरा नही है, कृश्न-लेश्यासे-पीतलेश्या-हरसुरतसें अछीहै, हां ! कृश्नांबर और-मलिनांबर बेशक ! खिलाफ कानुन-जैनशास्त्रके है,—

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताब-सफह (१४) पर तेहरीरहै, न्यायरत्नने कितने अन्यमतियोकों जैनीकिये उनके नाम बतानेमें क्यौं डरतेहै ? क्यौं-न-डरे ?-शिथिलमार्गी-होनेकेलिये झूठीबातें लिखमारतेहै,

(जवाब.) लेखक जिनकों साधुमानतेहै उनका कठिनमार्ग जाहेर करे जिससें आमलोगोकों मालूमहोकि-वे-ऐसेकठिनमार्गीहै, और डरता-वह-होगा जो-खिलाफहुकमजैनशास्त्रके तेहरीरकरे,-और-आप अपने नामसें-या-हस्तारक्षकी सहीसें जाहिरमें-न-आवे न्यायरत्न-हरलेखमें अपनेनामसें-औरहस्ताक्षरकी सहीसें जाहिरमें आतेहै, फिर कौनकहसकताहैकि-न्यायरत्न डरतेहै, न्यायरत्नने जिसजिसगेरमजहबवालोकों तालीमधर्मकी देकर जैनीकियेहै-जिसकों तलाशकरनाहो-मुलकोंमें-फिरकरकरलेवे, न्यायरत्न-न-शिथिलमार्गीहै-न-जुठीबातेंबनानेहवालेहै,-अबजरा कठिनमार्गी-और-शिथिलमार्गीका बयान सुनिये! जिससे तुमारेदिलका शकरफाहो,-पेस्तरके जैनमुनि-बनमें और उद्यानमें रहतेथे आजकल तुमारी ताकातनही ऐसाकरसको, देखलो ! आजकलशहरमें आकररहनाहोताहै. अगर कठिनमार्गीबनना चाहतेहो-तो-बनमें जाकररहो, कोरीसफाइ बताना दूसरीबातहै, जैनमुनि किसीकेलडकेकों दीक्षादेवेतो बिनाहुकम-मा-बापके नहीदेना शास्त्रका फ-

रमानहै, खयाल करो ! आजकल मुताबिक उसके बर्तावकरनेवाले कितनेहै, ?

जिज्ञासुजनमनः समाधिकिताब पृष्ट (१५) पर दलीलहै, अब है ! सुज्ञो ! ! शांतिविजयजी उत्सूत्रताका जबाब बतालाकर हमाराशुद्धआशय उत्तरके साथ लिखदियाहै,–

(जवाब,) शांतिविजयजीकी उत्सूत्रता क्या ! बतलाओगे ! ! –चोथीथूइकों वीतरागदेवकी वैरिणी कहना किसजैनसूत्रमें लिखाहै ? इसबातकों कोइसूत्रपाठसें सबुतकरे. अगर कोइसबुतनहीहै–तो–यहउत्सूत्रता हुइ–या–नही ? शांतिविजयजीकी उत्सूत्रता कोइसाबीतकरे, यूंतो तीर्थकरोके सामनेभी कइलोग तीर्थकरकों तीर्थकरतरीके नहीमानतेथे, इसीतरह शांतिविजयजीके लेखकों कोइ उत्सूत्र कहे–या–ना मंजूरकरे–तो–उससे शांतिविजयजी उत्सूत्रभाषी नही होसकते, अकलमंद उसीका नामहै–जोशास्त्रसबुतसें पेंश आवे, क्या ! इनबातोंसें शांतिविजयजी परास्त होगये समझतेहो ! हर्गिज नही, ! !

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताबके सफह (१७) परमजमूनहै इसतरह कइरोजतक परस्पर समभावसें बर्ततेथे (यानी) श्वेतांबर दिगंबर समभावसें बर्ततेथे, बाद–महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजीने नींदा द्वेष परस्परकरके मंदिरजानाभी छोडादिया, उनकी आमदनी बंदकरवा दिई, क्या ! यहीउनका पराजय किया ?

(जवाब.) लेखक–सूत्रआवश्यककी बडीटीका देखे, और तलाशकरे उसमे क्यालिखाहै ? श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नता पेस्तरसें है, महाराजश्री आत्मारामजी–आनंदविजयजीने भिन्नता नही कियी, –न किसीकी आमदनी बंद कराइ, हमने–जो–जैनपत्रमें लिखाथाकि –एक मयानमें दो–तलवार–नही रहसकती–वैसे–भिन्नश्रद्धावाले एक

धर्ममें एक रुप-नहीहोसकते-बहुतठीकहै, जैनाचार्यश्रीहीरविजयसूरि जीने-जब-शत्रुंजय-गिरनार-समेतशिखर-राजगृही-पावापुरीवगेरा-तीर्थोंके फुरमानपत्र बादशाह अखबरसे करवायेथे-ये-ये तीर्थ-जैन श्वेतांबरके लिखेहै, इसपर लेखक खयालकरे.

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताबके सफह (१६) पर बयानहै शांतिविजयजीका कहनाहैकि-शुभइरादेसे रागद्वेष करनेमें कुछ हर्ज नही.

(जवाब.) लेखक-अगर इसबातकों नामंजूररखतेहै-तो-बतलावे ! धर्ममें विघ्न डालनेवाले नमुचिको विश्नुकुमार मुनिने-क्यौं-सजा दिइ ? महाराज-कालिकाचार्यजी गर्दभिल्लराजाके सामने इरादे धर्मके क्यौं लडाइमें सामीलहुवे, ? इनका कषायकरना दुनियादारीकेलिये था-या-धर्मके लिये ? शांतिविजयजीकी दलीलकों तोडनेकी कोशिश तो करतेहो-मगर-टुट नही सकती, बल्कि ! पुख्ताहोती जातीहै. कल्पसूत्रमें जहां गौतमस्वामीका बयानहै देखो ! क्यालिखाहै, ?

कल्पसूत्र-वृत्तिका-पाठ,

(अनुष्टुप्-वृत्तम्.)

अहंकारोपिबोधाय-रागोपि गुरुभक्तये,
विषादः केवलायाभूत्-चित्रं श्रीगौतमप्रभोः,-

[मायना.] गौतमस्वामीका-अहंकारभी-प्रतिबोधपानेकेलिये हुवा, रागकिया-तो-तीर्थंकरमहावीर जैसे गुरुकी भक्तिपर किया. तीर्थंकरमहावीर स्वामीके निर्वाणहोनेपर रंज किया-सोभी-फायदेमंद हुवा, सोचो ! इसबातकोकि-इसका नतीजा क्या निकला ? अहंकार-राग-और-विषाद इरादे धर्मके फायदेमंदहुवे-या-नहो,-

(३०) ☞ [दरबयान-सुरतसंघ-औरअगत्यका ठहराव.]

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताब पृष्ट [१९] पर मजमूनहै, सुरतसंघका पराजय करके-सुरतसंघ-अगत्यका ठहराव-नामकीकिताब मिथ्यात्व रोगका औषध-राजेंद्रसूर्योदय किताबमें बताकर तमामहिंदुस्थानके श्वेतांबर संघकों समर्पण करदिइगइ, ऊससे सभीमहाशयोंकी शंकाका-नाश होगया.

(जवाब.) सुरतसंघका पराजय कोइ क्याकरेगा ? उसकातो जयहुवाहै.-उनोने कैसा उमदा अगत्यका ठहरावकियाकि-जिससें-उनकेशहरमें-सनातन जैनश्वेतांबर आम्नायमें नयेमजहबकी-जड-जमनेनहीपाइ. और उनोने उसकिताबकों मुल्कमुल्कमें भेजदिइकि-जिससे तमाम-जैनश्वेतांबर-चारस्तुति-माननेवालोका-तीनथुइकेबारेमें-शक-रफा होगया. मिथ्यात्वरोगका औषधदेखना होतो चतुर्थस्तुति निर्णयकिताबमें देखो,-राजेंद्रसूर्योदय-किताबका-जवाब-शांतिसूर्योदय तयारहै. आमलोगोकों रौशन-हो, सुरतसंघका पराजय नहीहुवा-बल्किन् ! जयहुवाहै. महाराजश्री आत्मारामजी-आनंदविजयजीका-बनायाहुवा-चतुर्थस्तुतिनिर्णय-हिंदुस्थानकेबहार-आफ्रिका-एडन-बर्मा-वगेरामुल्कों-जहांजहां सनातन जैनश्वेतांबर चारस्तुतिमाननेवाले श्रावक गयेहे-वहांतक-पहुचाहै. और त्रिस्तुतिपरामर्शभी पहुचेगा,-

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताब पृष्ट (१७) लेखकने लिखाहै-" नतो तीनको उठाइ-न-चारको "-यथोचितस्थानमें जहांकरनेकी है-वहां-करतेहै.

(जवाब.) फिर बात क्याहुइ ? यथोचितस्थानमें जहांकरनेकीहै-वहां-करतेहो-तो-उसका नाम क्यों नही लीखा, ?-प्रतिक्रमणकेवख्त चारथुइ करनामंजूरहै-यानही ?-लेखक-इसबातकों जाहिर करे, अगरकोइ कहे आवश्यकसूत्रकी बडीटीकामें वैयावच्चगराणं पाठ

क्यौं नही ? जवाबमें मालूमहो बडीटीका निर्युक्तिपर व्याख्याकरतीहै उसमें सूत्रस्पर्शकनिर्युक्तिसें जोपाठ-रचनामें-निकट आया उसकों बतलातीहे, संपूर्णसूत्रका अर्थ बयान नही करती. इसीसबब सूत्रस्पर्शक निर्युक्तिकारने उसका कथन नहीकिया. थोडेपढेहुवे लोग इतनीबारीकीकों पहुंचतेनही. और उनके सामने कहदियाजाताहै देखोभाइ ! बडीटीकामें नहीहै, आवश्यकसूत्रकी बडीटीकानिर्युक्तिपर आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजीने बनाइहै, प्रश्नोत्तरपत्रिकामें लेखकनेलिखाहै हरिभद्र सूरिजीने चारथुइ-स्थापनकरनेकोलिये ललितविस्तरा ग्रंथबनाया. और फिर उनहीकी बनाइ आवश्यकसूत्रकी बडीटीकाका सबुत चाहना.यह कितनी ताज्जुबकी बातहै, !

जिज्ञासुजनमनः समाधिकिताब पृष्ट (१९) पर बयानहैकि-जबतक उत्सूत्रप्ररुपक-बहार-न-काढेजायगें तबतक अन्यमतावलंबीयोंकी कुतर्कोंका जवाबदेना दुर्लभ होगा.

(जवाब.) हमकों अन्यमतावलंबीयोंकी दलीलोंका-जवाबदेना कोइ दुसवार नही,-और उत्सूत्रप्ररुपकोंकों बेशक ! बहार निकालना चाहिये, मगर पेस्तर इसबातका तस्विया करलोकि-उत्सूत्रप्ररुपककोन है. ? शांतिविकयजीके लेख विनाशास्त्रसबुतके हर्गिज ! नहीहोते, हर लेखमें शास्त्रसबुतसें पेंश आतेहै. ख्याल रहे ! शांतिविजयजी हमेशां खुशमिजाज और कुतर्कीयोंकी कुतर्क-रुप-अशांतिकों मिटानेवालेहै, जिसकोजोकुछलिखनाहो फिर लिखे-इन्साफके लेख तयारहै.

जिज्ञासुजनमनःसमाधिकिताब पृष्ट (१९) पर मजमूनहैकि-अब-जौ-जैनपत्रमें किसीप्रकारका अपशब्द देखुंगा-तो-अवस्य लिखनेमें-न-चुकुंगा.

(जवाब.) बेशक ! मतचुकना, जिसकीउमेद हो-पुरीकरलेना. यहकोइ-न-समझेकि-विद्यासागर चूपरहे, जितना लिखोगे जवाबमें उससेदुगुना-सामनेपाओगें,—

३१ ☞ दरबयान-जाहिरखबरके लेखका ।

सुरत-नाणावट-खुदाबक्षके प्रेसकी छपी हुइ जाहिरखबर पृष्ट (२) पर तेहरीर है कि-ते वखते दंडकना अंतमां थुइ कही. ते दंडक केटला ? त्यारे सूरिजीये पांच दंडक बताव्या. चुनीलाले लख्या, पण तेनो अर्थ ते समज्या नही.

(जवाब.) चुनीलालजी श्रावक थे, फिरभी उनकी होशियारी समझोकि इतनी चर्चा उनोने किइ, अगर दंडकके बारेमें कुछ पुछना हो हमसे पुछो. चैत्यवंदनमें पांच दंडक-चार स्तुति-और -प्रणिधानपाठ खुला है. शक्रस्तव-अरिहंत चेइयाणं-लोगस्स-पुरुखरवरदीवढे-और सिद्धाणंबुद्धाणं-ये-पांच दंडक कहे जाते है. चार स्तुति जाहिर है, जिसकों आम जैन लोग जानते है. प्रणिधान कहो कि-जयवीयराय कहो-बात-एकही है,—

३२ ☞ दरबयान-ज्ञानबाजी.

जिज्ञासु जन मनः समाधि किताब पृष्ट (१९) पर तेहरीर है पासथ्थोने ज्ञानबाजी नाम रखकर प्रमाद फैलानेका उपाव निकाला है, हारजीत होनेसें आर्तध्यानका कारण है,

(जवाब.) जिसमें-चौदह गुनस्थान-ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय-वगेरा अष्टकर्मोका बयान है उसकों-कौन अकलमंद-आर्त्तध्यानका कारण कह सकता है ? बल्कि ! धर्मध्यान आनेका सबब है, पासथ्थोने ज्ञानबाजी नाम नही रखा. ज्ञानी लोगोने रखा है, क्या क्या ! उमदा ज्ञानकी वातें उसमें दर्ज है उसपर खयाल करो. न्यायरत्नके जवाबकों कोइ किसी सुरत तोड नही सकता. क्यौंकि -वे-सच बातकों बयान करनेवाले है,-

३३ ☞ हिदायत-उल-आम.

आम जैन श्वेतांबर चार स्तुति माननेवालोकों-लाजिम है अपने सचे एतकातमे पावंद रहे. चार स्तुति कदीमसे है, लेखक अगर सबुत रखते हो-तो-पाठ जाहिर करे कि-फलाने सूत्रकी पंचांगीमें प्रतिक्रमणके वख्त तीन थुइ करना लिखी है. दरमियान शास्त्रार्थके पाठ होना जरुरी है, त्रिस्तुतिपरामर्शका अवल हिस्सा पूर्ण हुवा, इतनेपर कोइ कुछ लिखेगा-तो-दूसरा हिस्सा तयार है, राजेंद्रसूर्योदय किताबका जवाब शांतिसूर्योदयभी-मौजूद-है, महाराजश्री झवेरसागरजीके वख्तका बना हुवा-निर्णयप्रभाकर ग्रंथ भी रतलामके सनातन-जैन श्वेतांबर संघ-चारस्तुति माननेवालोंके पास तयार है, अगर कोइ छपवाना चाहे-तो-छपवा सकते है,-हमारे गुरुके-या-हमारे नामपर-किसी अखबार-या-किताबमें-किसीने कुछ आक्षेप किया हुवा देखो, फौरन हमारे पास भेजदो हम उसका माकुल जवाब देयगे.

त्रिस्तुतिपरामर्शका-अवलहिस्सा खतम हुवा.

[कवि-सुरजमल्ल-साकीन उदयपुर-मुल्क मेवाडकी बनाई हुई गुरुभक्तिपर-शेयरदार लावनी.]

विद्यासागर न्यायरत्न श्री-शांतिविजयजी मुनिमहाराज,
तीरथ कीने आपके जनम जनमके सुधरे काज, (ए टेक,)
शासननायक सब सुखदायक-जिनका निशदिन ध्यान धरो,
भव्य जीवोके प्रेमहित चितसे आप कल्यान करो,
शठनर सुधरे सुनकर बानी-ऐसो मुनि व्याख्यान करो,
स्वल अज्ञानी पशुसम उनके हिरदेमें ज्ञान धरो.

(शेयर)

आपने जिनमतको धारन-करके त्यागो है कुटुंब,
उधरे पटल निज उरके मुनिजी-दूरकर दिनोहै तम.
दीपायो जिनमतकों स्वामी-प्रकाशित भयो रविसम,
जन्म जन्मांतरकी बिगरी-बात सुधरी इस जनम.

(मिलान.)

करते हो सब कठिन तपस्या-धन्य धन्य मुनिजी सुखसाज
तीरथ कीने आपके जनम जनमके सुधरे काज, (१)
पहिले समेतशिखरगिरि प्रभुके-आप मुनिजी किये दर्शन,
एक महिना गिरिपर बेठ कियो प्रभुजीको भजन,
पावापुरीमे रहे तीन महिना-आप मुनिजी हो धनधन.
कइ जिज्ञासु आपसे पुछे शास्तरकों बर्नन.

(शेयर.)

अंतरिक्ष पारसनाथजीमें-आठ दिन किनो है ध्यान,
शतरुंजाजी गिरिराजमें चौमासो कर दिनो बखान,
गिरनारजी दिन बारां रहकर-दिपायो साचोहि ज्ञान,
आठ दिन आबुजी उपर-बिराजकर किनो है ध्यान.

(मिलान.)

रानकपुरजी पांच दिवसतक-आप मुनिजी रहे बिराज,
तीरथ किने आपके जनम जनमके सुधरे काज, (२)
हस्तिनागपुर आप बिराजे-आठ दिवसमें लिखलियो हाल,
कंपिलाजीमें रहे दिन तीन आप भव्यजनके प्रतिपाल,
शौरीपुर दिन एकटीके मुनि-काटयों सकलकलिमल जंजाल,
कौशांबीमें रहके मुनीश्वर तीन दिवस रिपु किये पेंमाल.

(शेयर.)

सावथ्थी नगरीमें एक दिन-वास मुनिजन जाकर्यो,
एक दिन भदीलपुर भीतर-पाप तनकों सब हर्यो.

मिथिलापुरी एकादिन टीके-वहां ध्यान जिनजीको धर्यो,
राजगृही दिन पांच बसे-वहां सकलपाप तनकों जर्यो,

(मिलान.)

अयोध्यामें दिन आठ बिराजे-मिली केइ ज्ञानीकी समाज,
तीरथ किने आपके जनमजनमके सुधरे काज, (३)
मांडवगढ रहे एक दिवस वहां-कर्यो आप भारी उपकार,
शंखेश्वरजी रहे दिनतीन रख्यो मनमें आचार,
तारंगाजी दिनतीन रहे वहां-तप्तबुझाइ तनकी अपार,
केशरीयाजी रहके छहदिन बोलेहैं वहां जयजयकार,

(शेयर.)

फलोदी पारसनाथजीमे-तीनदीन तपसा करी,
मकसीपारसनाथजीसे-पखवाडे विनति खरी,
काशी दिनरहे आठ भेटे-आपसे केइ शासतरी.
चंपापुरी एकमास रहकर-चर्चा करी मुनि रसभरी,

(मिलान.)

सुरजमल्ल कहे क्षत्रीयकुंडपर-तीनदिवस बेठे मुनिराज,
तीरथकीने आपके जनमजनमके सुधरेकाज, (४)

[गुरुभक्तिपर-शेयरदार-लावनी-खतमहुइ.--]